अष्टम माला, खंड 18, अंक 1

गुरुवार, 17 जुलाई, 1986
26 आषाढ़, 1908 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद

का

हिन्दी संस्करण

छठा सत्र
(आठवीं लोक सभा)

(खंड 18 में अंक 1 से 10 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

[अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी। उसका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा]

विषय-सूची

अष्टम माला, खंड 18, छठा सत्र, 1986/1908 (शक)

अंक 1, गुरुवार, 17 जुलाई, 1986/26 आषाढ़, 1908 (शक)

विषय	पृष्ठ
निधन सम्बन्धी उल्लेख	2—23

आठवीं लोक सभा के सदस्यों की
वर्णानुक्रमानुसार सूची

अ

अंबैया, श्री टी० (सिकन्दराबाद)

अंसारी, श्री जियाउर्रहमान (उन्नाव)

अंसारी, श्री अब्दुल हन्नान (मधुबनी)

अख्तर हसन, श्री (कैराना)

अग्रवाल, श्री जय प्रकाश (चांदनी चौक)

अठवाल, श्री चरनजीत सिंह (रोपड़)

अडईकलराज, श्री एल० (तिरुचिरापल्ली)

अताउर्रहमान, श्री (बारापेट)

अतीतन, श्री आर० धनुषकोडी (तिरुचेन्दूर)

अवियोडी, डा० के० जी० (कालीकट)

अण्णानम्बी, श्री आर० (पोल्लाची)

अप्पालानरसिंहम, श्री पी० (अनकापल्ली)

अब्दुल गफूर, श्री (सीवन)

अब्दुल हमीद, श्री (धुब्री)

अब्दुल्ला, बेगम, अकबर जहां (अनन्तनाग)

अब्बासी, श्री के० जे० (डुमरियागंज)

अर्जुन सिंह, श्री (दक्षिण दिल्ली)

अय्यर, श्री वी० एस० कृष्ण (बंगलौर दक्षिण)

अरुणाचलम, श्री एम० (टेंकासी)

अलखाराम, श्री (सलुम्बर)

अवस्थी, श्री जगदीश (बिल्हौर)

अहमद, श्रीमती आबिदा (बरेली)

अहमद, श्री सरफराज (गिरिडीह)

अहमद, श्री सैफुद्दीन (मंगलदाई)

आ

आचार्य, श्री बसुदेव (बांकुरा)

आजाद, श्री गुलाम नबी (वाशिम)

आजाद, श्री भागवत झा (भागलपुर)

आनन्द सिंह, श्री (गोंडा)

उ

उन्नीकृष्णन, श्री के० पी० (बडागरा)

उरांव, श्रीमती सुमति (लोहारडागा)

ए

एंथनी, श्री फ्रेंक (नाम निर्देशित आंग्ल भारतीय)

एन्टनी, श्री पी० ए० (त्रिचूर)

ऐ

ऐंगती, श्री बीरेन सिंह (स्वायत्तशासी जिला)

ओ

ओडेदरा, श्री भरत कुमार (पोरबन्दर)

ओडेयार, श्री चनैया (दावनगीर)

ओवेसी, श्री सुल्तान सलाउद्दीन (हैदराबाद)

क

ककाडे, श्री सांभाजीराव (बारामती)

कमलनाथ, श्री (छिंदवाड़ा)

कमला कुमारी, कुमारी (पलामू)

कलानिधि, डा० ए० (मद्रास मध्य)

कल्पना देवी, डा० टी० (वारंगल)

कांबले, श्री अरविंद तुलसीराम (उस्मानाबाद)

कण्णन, श्री पी० (तिरुचेंगोडे)

काबुली, श्री अब्दुल रशीद (श्रीनगर)

कामत, श्री गुरुदास (बम्बई उत्तर पूर्व)

कामसन, प्रो० मिजिनलंग (बाह्य, मणिपुर)

किदवई, श्रीमती मोहसिना (मेरठ)

किन्दर लाल, श्री (हरदोई)

किस्कू, श्री पृथ्वी चन्द (दमका)

कुंवर राम, श्री (नवादा)

कुचन, श्री गंगाधर एस० (शोलापुर)

कुजूर, श्री मारिस (सुन्दरगढ़)

कुन्जम्बु, श्री के० (अडूर)

कुप्पुस्वामी, श्री सी० के० (कोयम्बटूर)

कुमारमंगलम, श्री पी० आर० (सलेम)

कुरियन, प्रो० पी० जे० (इदुक्की)

कुरूप, श्री सुरेश (कोट्टायम)

कुरेशी, श्री अजीज (सतना)

कुलनदईवेलु, श्री पी० (गोबिचेट्टिपालयम)

केन, श्री लाला राम (बयाना)

केयूर भूषण, श्री (रायपुर)

कोनयक, श्री चिंगबांग (नागालैंड)

कौल, श्रीमती शीला (लखनऊ)

कौशल, श्री जगन्नाथ (चण्डीगढ़)

कृष्ण कुमार, श्री एस० (क्विलोन)

कृष्ण सिंह, श्री (भिण्ड)

क्षीरसागर, श्रीमती केसरबाई (बीड)

ख

खत्री, श्री निर्मल (फैजाबाद)

खां, श्री असलम शेर (बेतूल)

खां, श्री आरिफ मोहम्मद (बहराइच)

खां, श्री खुर्शीद आलम (फर्रुखाबाद)

खां, श्री जुल्फिकार अली (रामपुर)

खां, श्री मोहम्मद महफूज अली (एटा)

खां, श्री मोहम्मद अयूब (झुन्झुनू)

खां, श्री रहीम (फरीदाबाद)

खिरहर, श्री राम श्रेष्ठ (सीतामढ़ी)

ग

गंगा राम, श्री (फिरोजाबाद)

गढ़वी, श्री बी० के० (बनासकांठा)

गहलौत, श्री अशोक (जोधपुर)

गांधी, श्री राजीव (अमेठी)

गाडगिल, श्री वी० एन० (पुणे)

गामित, श्री सी० डी० (माण्डवी)

गिल, श्री मेवा सिंह (लुधियाना)

गायकवाड़, श्री उदयसिंहराव (कोल्हापुर)

गायकवाड़, श्री रणजीत सिंह (बड़ौदा)

गावली, श्री सीताराम जे० (दादरा और नगर हवेली)

गावीत, श्री मानिकराव होडल्या (नन्दरबार)

गुप्त, श्री इन्द्रजीत (बसीरहाट)

गुप्त, श्री जनक राज (जम्मू)

गुप्त, श्रीमती प्रभावती (मोतीहारी)

गुरड्डी, श्री एस० एम० (बीजापुर)

गुहा, डा० फूलरेणु (कन्टई)

गोपेश्वर, श्री (जमशेदपुर)

गोमांगों, श्री गिरिधर (कोरापुट)

गोस्वामी, श्री दिनेश (गौहाटी)

गोहिल, श्री जी० बी० (भावनगर)

गौंडर, श्री ए० एस० (पलानी)

गौडा, श्री एच० एन० नन्जे (हसन)

घ

घोलप, श्री एस० जी० (थाणे)

घोष, श्री तरुण कान्ति (बारासट)

घोष, श्री विमल कान्ति (सीरमपुर)

घोष गोस्वामी, श्रीमती विभा (नवद्वीप)

घोषाल, श्री देवी (बैरकपुर)

च

चटर्जी, श्री सोमनाथ (बोलपुर)

चतुर्वेदी, श्री नरेश चन्द्र (कानपुर)

चतुर्वेदी, श्रीमती विद्यावती (खजुराहो)

चन्द्रशेखर, श्रीमती एम० (श्रीपेरम्बुदूर)

चन्द्रशेखरप्पा, श्री टी०वी० (शिमोगा)

चन्द्राकर, श्री चन्दू लाल (दुर्ग)

चन्द्रेश कुमारी, श्रीमती (कांगड़ा)

चरण सिंह, श्री (बागपत)

चव्हाण, श्री एस० बी० (नांदेड)

चव्हाण, श्रीमती प्रेमलाबाई (कराड़)

चार्ल्स, श्री ए० (त्रिवेन्द्रम)

चालिहा, श्री पराग (जोरहाट)

चावड़ा, श्री ईश्वर भाई के० (आनन्द)

चिदम्बरम, श्री पी० (शिवगंगा)

चिन्ता मोहन, डा० (तिरुपति)

चौधरी, श्रीमती ऊषा (अमरावती)

चौधरी, श्री कमल (होशियारपुर)

चौधरी, श्री ए० बी० ए० गनीखान (माल्दा)

चौधरी, श्री जगन्नाथ (बलिया)

चौधरी, श्री नन्दलाल (सागर)

चौधरी, श्री मनफूल सिंह (बीकानेर)

चौधरी, श्री समर ब्रहम (कोकराझार)

चौधरी, श्री सैफुद्दीन (कटवा)

चौबे, श्री नारायण (मिदनापुर)

ज

जगतरक्षकन, डा० एस० (चेंगलपट्ट)

जगन्नाथ प्रसाद, श्री (मोहन लालगंज)

जडेजा, श्री डी० पी० (जामनगर)

जनार्दनन, श्री कादम्बुर (तिरुनेलवेली)

जयदीप सिंह, श्री (गोधरा)

जय मोहन, श्री ए० (तिरुपत्तूर)

जांगड़े, श्री खेलन राम (बिलासपुर)

जाखड़, डा० बलराम (सीकर)

जाटव, श्री कमोदीलाल, (मुरैना)

जाफर शरीफ, श्री सी० के० (बंगलौर उत्तर)

जायनल अबेदिन, श्री (जंगीपुर)

जितेन्द्र प्रसाद, श्री (शाहजहांपुर)

जितेन्द्र सिंह, श्री (महाराजगंज)

जीवारथिनम, श्री आर० (अराकोनम)

जुझार सिंह, श्री (झालावाड़)

जेना, श्री चिन्तामणि (बालासोर)

जैन, श्री डाल चन्द्र (दमोह)

जैन, श्री निहाल सिंह (आगरा)

जैन, श्री वृद्धि चन्द्र (बाड़मेर)

जैनुल बशर, श्री (गाजीपुर)

झ

झांसी लक्ष्मी, श्रीमती एन० पी० (चित्तूर)

झिकराम, श्री एम० एल० (मांडला)

ट

टाइटलर, श्री जगदीश (दिल्ली सदर)

ठ

ठक्कर, श्रीमती ऊषा (कच्छ)

ठाकुर, श्री सी०पी० (पटना)

ड

डागा, श्री मूल चन्द (पाली)

डामर, श्री सोमजी भाई (दोहद)

डिगाल, श्री राधाकांत (फूलबनी)

डेनिस, श्री एन० (नागर कोइल)

डोगरा, श्री गिरधारी लाल (ऊधमपुर)

डोण गांवकर, श्री साहब राव पाटिल (औरंगाबाद

डोरा, श्री एच० ए० (श्रीकाकुलम)

ढ

ढिल्लन, डा० जी० एस० (फिरोजपुर)

त

तंगराजु, श्री एस० (पेरम्बलूर)

तपेश्वर सिंह, श्री (विक्रमगंज)

तम्बिदुराई, श्री एम० (धर्मपुरी)

तांती, श्री भद्रेश्वर (कलियाबोर)

तारादेवी, कुमारी डी० के० (चिकमगलूर)

तारिक अनवर, श्री (कटिहार)

तिग्गा, श्री साइमन (खूंटी)

तिरकी, श्री पीयूष (अलीपुरद्वार)

तिलकधारी सिंह, श्री (कोडरमा)

तिवारी, प्रो० के० के० (बक्सर)

तुर, सरदार त्रिलोचन सिंह (तरनतारन)

तुलसीराम, श्री वी० (नगरकुरनूल)

तोमर, श्रीमती ऊषा रानी (अलीगढ़)

त्यागी, श्री धर्मवीर सिंह (मुजफ्फरनगर)

त्रिपाठी, डा० चन्द्र शेखर (खलीलाबाद)

त्रिपाठी, श्रीमती चन्द्रा (चन्दौली)

थ

थामस, प्रो० के० वी० (एरनाकुलम)

थामस, श्री तम्पन (मवेलिकरा)

थुंगन, श्री पी० के० (अरुणाचल पश्चिम)

थोटा, श्री गोपाल कृष्ण (काकीनाडा)

थोरट, श्री भाऊसाहिब (पंढरपुर)

द

दण्डवते, प्रो० मधु (राजापुर)

दत्त, श्री अमल (डायमन्ड हार्बर)

दर्दी, श्री तेजा सिंह (भटिंडा)

दलवाई, श्री हुसैन (रत्नगिरि)

दलबीर सिंह, श्री (शहडोल)

दलबीर सिंह, चौधरी (सिरसा)

दाभी, श्री अजीत सिंह (केरा)

दास, श्री अनादि चरण (जाजपुर)

दास, श्री बिपिनपाल (तेजपुर)

दास, मुन्शी, श्री प्रिय रंजन (हावड़ा)

दास, श्री रेणुपद (कृष्णनगर)

दास, श्री सुदर्शन (करीमगंज)

दिग्विजय सिंह, श्री (राजगढ़)

दिग्विजय सिंह, श्री (सुरेन्द्र नगर)

दिघे, श्री शरद (बम्बई उत्तर-मध्य)

दिनेश सिंह, श्री (प्रतापगढ़)

दीक्षित, श्रीमती शीला (कन्नौज)

दूबे, श्री भीष्म देव (बांदा)

देब, श्री वी० किशोरचन्द्र एस० (पार्वतीपुरम)

देब, श्री सन्तोष मोहन (सिलचर)

देब, श्री शरत (केन्द्रपाड़ा)

देवरा, श्री मुरली (बम्बई दक्षिण)

देवराजन, श्री बी० (रसिपुरम)

देवी, प्रो० चन्द्र भानु (बलिया)

ध

धारीवाल, श्री शांति (कोटा)

न

नटराजन, श्री के० आर० (डिण्डिगुल)

नटवर सिंह, श्री के० (भरतपुर)

नवल प्रभाकर, श्रीमती सुन्दरवती (करोलबाग)

नामग्याल, श्री पी० (लद्दाख)

नायक, श्री जी० देवराय (कनारा)

नायक, श्री शांताराम (पणजी)

नायकर, श्री डी० के० (धारवाड़ उत्तर)

नारायणन, श्री के० आर० (ओट्टापलम)

नेखरा, श्री रामेश्वर (होशंगाबाद)

नेगी, श्री चन्द्र मोहन सिंह (गढ़वाल)

नेताम, श्री अरविन्द (कांकेर)

नेहरू, श्री अरुण कुमार (रायबरेली)

प

पांजा, श्री ए० के० (कलकत्ता उत्तर-पूर्व)

पंत, श्री कृष्ण चन्द्र (नई दिल्ली)

पकीर मोहम्मद, श्री ई० एस० एम० (मयूरम)

पटनायक, श्री जगन्नाथ (कालाहण्डी)

पटनायक, श्रीमती जयन्ती (कटक)

पटेल, श्री अहमद एम० (भड़ौच)

पटेल, श्री यू० एच० (बलसार)

जयदीप सिंह, श्री (गोधरा)

जय मोहन, श्री ए० (तिरुपत्तूर)

जोगड़े, श्री खेलन राम (बिलासपुर)

जाखड़, डा० बलराम (सीकर)

जाटव, श्री कमोदीलाल, (मुरैना)

जाफर शरीफ, श्री सी० के० (बंगलौर उत्तर)

जायनल अबेदिन, श्री (जंगीपुर)

जितेन्द्र प्रसाद, श्री (शाहजहांपुर)

जितेन्द्र सिंह, श्री (महाराजगंज)

जीवारथिनम, श्री आर० (अराकोनम)

जुझार सिंह, श्री (झालावाड़)

जेना, श्री चिन्तामणि (बालासोर)

जैन, श्री डाल चन्द्र (दमोह)

जैन, श्री निहाल सिंह (आगरा)

जैन, श्री वृद्धि चन्द्र (बाडमेर)

जैनुल बशर, श्री (गाजीपुर)

झ

झांसी लक्ष्मी, श्रीमती एन० पी० (चित्तूर)

झिकराम, श्री एम० एल० (मांडला)

ट

टाइटलर, श्री जगदीश (दिल्ली सदर)

ठ

ठक्कर, श्रीमती ऊषा (कच्छ)

ठाकुर, श्री सी०पी० (पटना)

ड

डागा, श्री मूल चन्द (पाली)

डामर, श्री सोमजी भाई (दोहद)

डिगाल, श्री राधाकांत (फूलबनी)

डेनिस, श्री एन० (नागर कोइल)

डोगरा, श्री गिरधारी लाल (ऊधमपुर)

डोण गांवकर, श्री साहब राव पाटिल (औरंगाबाद)

डोरा, श्री एच० ए० (श्रीकाकुलम)

ढ

ढिल्लन, डा० जी० एस० (फिरोजपुर)

त

तंगराजु, श्री एस० (पेरम्बलूर)

तपेश्वर सिंह, श्री (विक्रमगंज)

तम्बिदुराई, श्री एम० (धर्मपुरी)

तांती, श्री भद्रेश्वर (कलियाबोर)

तारादेवी, कुमारी डी० के० (चिकमगलूर)

तारिक अनवर, श्री (कटिहार)

तिग्गा, श्री साइमन (खूंटी)

तिरकी, श्री पीयूष (अलीपुरद्वार)

तिलकधारी सिंह, श्री (कोडरमा)

तिवारी, प्रो० के० के० (बक्सर)

तुर, सरदार त्रिलोचन सिंह (तरनतारन)

तुलसीराम, श्री वी० (नगरकुरनूल)

तोमर, श्रीमती ऊषा रानी (अलीगढ़)

त्यागी, श्री धर्मवीर सिंह (मुजफ्फरनगर)

त्रिपाठी, डा० चन्द्र शेखर (खलीलाबाद)

त्रिपाठी, श्रीमती चन्द्रा (चन्दौली)

थ

थामस, प्रो० के० वी० (एरनाकुलम)

थामस, श्री तम्पन (मवेलिकरा)

चुंगल, श्री पी० के० (अरुणाचल पश्चिम)

चोटा, श्री गोपाल कृष्ण (काकीनाडा)

थोरट, श्री भाऊसाहिब (पंढरपुर)

द

दण्डवते, प्रो० मधु (राजापुर)

दत्त, श्री अमल (डायमन्ड हार्बर)

दर्दी, श्री तेजा सिंह (भटिंडा)

दलवाई, श्री हुसैन (रत्नगिरि)

दलबीर सिंह, श्री (शहडोल)

दलबीर सिंह, चौधरी (सिरसा)

दामी, श्री अजीत सिंह (केरा)

दास, श्री अनादि चरण (जाजपुर)

दास, श्री बिपिनपाल (तेजपुर)

दास, मुन्शी, श्री प्रिय रंजन (हावड़ा)

दास, श्री रेणुपद (कृष्णनगर)

दास, श्री सुदर्शन (करीमगंज)

दिग्विजय सिंह, श्री (राजगढ़)

दिग्विजय सिंह, श्री (सुरेन्द्र नगर)

दिघे, श्री शरद (बम्बई उत्तर-मध्य)

दिनेश सिंह, श्री (प्रतापगढ़)

दीक्षित, श्रीमती शीला (कन्नौज)

दूबे, श्री भीष्म देव (बांदा)

देब, श्री वी० किशोरचन्द्र एस० (पार्वतीपुरम)

देब, श्री सन्तोष मोहन (सिलचर)

देब, श्री शरत (केन्द्रपाड़ा)

देवरा, श्री मुरली (बम्बई दक्षिण)

देवराजन, श्री बी० (रसिपुरम)

देवी, प्रो० चन्द्र भानु (बलिया)

ध

धारीवाल, श्री शांति (कोटा)

न

नटराजन, श्री के० आर० (डिण्डिगुल)

नटवर सिंह, श्री के० (भरतपुर)

नवल प्रभाकर, श्रीमती सुन्दरवती (करोलबाग)

नामग्याल, श्री पी० (लद्दाख)

नायक, श्री जी० देवराय (कनारा)

नायक, श्री शांताराम (पणजी)

नायकर, श्री डी० के० (धारवाड़ उत्तर)

नारायणन, श्री के० आर० (ओट्टापलम)

नीखरा, श्री रामेश्वर (होशंगाबाद)

नेगी, श्री चन्द्र मोहन सिंह (गढ़वाल)

नेताम, श्री अरविन्द (कांकेर)

नेहरू, श्री अरुण कुमार (रायबरेली)

प

पांजा, श्री ए० के० (कलकत्ता उत्तर-पूर्व)

पंत, श्री कृष्ण चन्द्र (नई दिल्ली)

पकीर मोहम्मद, श्री ई० एस० एम० (मयूरम)

पटनायक, श्री जगन्नाथ (कालाहण्डी)

पटनायक, श्रीमती जयन्ती (कटक)

पटेल, श्री अहमद एम० (भड़ोच)

पटेल, श्री यू० एच० (बलसार)

पटेल, डा० ए० के० (मेहसाना)

पटेल, श्री एच० एम० (साबरकंठा)

पटेल, श्री जी० आई० (गांधीनगर)

पटेल, श्री मोहन भाई (जूनागढ़)

पटेल, श्री राम पूजन (फूलपुर)

पटेल, श्री सी० डी० (सूरत)

पडयाच्ची, श्री एस० एस० रामास्वामी (तिंडीवनम)

पनिका, श्री राम प्यारे (राबर्ट्सगंज)

पराशर, प्रो० नारायण चन्द (हमीरपुर)

पलाकोंड्रायुडू, श्री एस० (राजमपेट)

पवार, श्री बालासाहिब (जालना)

पवार, श्री सत्यनारायण (उज्जैन)

पांडेय, श्री काली प्रसाद (गोपालगंज)

पांडे, श्री दामोदर (हजारी बाग)

पांडे, श्री मदन (गोरखपुर)

पांडे, श्री मनोज (बेतिया)

पांडे, श्री राज मंगल (देवरिया)

पाइलट, श्री राजेश (दौसा)

पाटिल, श्री उत्तमराव (यवतमाल)

पाटिल, श्री एच० बी० (बागलकोट)

पाटिल, श्री डी० बी० (कोलाबा)

पाटिल, श्री प्रकाश बी० (सांगली)

पाटिल, श्री बालासाहेब विखे (कोपरगांव)

पाटिल, श्री यशवंतराव गडाख (अहमदनगर)

पाटिल, श्री विजय एन० (इरन्दोल)

पाटिल, श्री वीरेन्द्र (गुलबर्गा)

पाटिल, श्री शिवराज वी० (लातूर)

पाठक, श्री आनन्द (दार्जिलिंग)

पाठक, श्री चन्द्र किशोर (सहरसा)

पाणिग्रही, श्री चिन्तामणि (भुवनेश्वर)

पाणिग्रही, श्री श्रीबल्लभ (देवगढ़)

पारधी, श्री केशवराव (भण्डारा)

पासवान, श्री राम भगत (रोसड़ा)

पुजारी, श्री जनार्दन (मंगलौर)

पुरुषोत्तमन, श्री वक्कम (अलप्पी)

पुरोहित, श्री बनवारी लाल (नागपुर)

पुष्पा देवी, कुमारी (रायगढ़)

पूरन चन्द्र, श्री (हाथरस)

पेंचालैया, श्री पी० (नेल्लोर)

पेरुमान, डा० पी० वल्लल (चिदम्बरम)

पोतदुखे, श्री शांताराम (चन्द्रपुर)

प्रकाश चन्द्र, श्री (बाढ़)

प्रधान, श्री के० एन० (भोपाल)

प्रधान, श्री के० (नौरंगपुर)

प्रभु, श्री आर० (नीलगिरि)

फ

फर्नान्डीज, श्री ओस्कर (उदीपी)

फैलोरो, श्री एडुआर्डो (मारमागाओ)

ब

बंसीलाल, श्री (भिवानी)

बघेल, श्री प्रताप सिंह (धार)

बच्चन, श्री अमिताभ (इलाहाबाद)

बनर्जी, कुमारी ममता (जादवपुर)

बनातवाला, श्री जी० एम० (पोन्नानी)

बर्मन, श्री पलास (बलूरघाट)

बलरामन, श्री एल० (वन्डावासी)

बशीर, श्री टी० (चिरायिंकिल)

बसवराजू, श्री जी० एस० (टुमकुर)

बसव राजेश्वरी, श्रीमती (बेल्लारी)

बसु, श्री अनिल (आरामबाग)

बागुन सुम्बरूई, श्री (सिंहभूम)

बाजपेयी, डा० राजेन्द्र कुमारी (सीतापुर)

बालगोड़, श्री टी० (निजामाबाद)

बाली, श्रीमती वैजयन्तीमाला (मद्रास दक्षिण)

बिस्वास, श्री अजय (त्रिपुरा पश्चिम)

बीरबल, श्री (गंगानगर)

बीरेन्द्र सिंह, राव (महेन्द्रगढ़)

बीरेन्द्र सिंह, श्री (हिसार)

बुवानिया, श्री नरेन्द्र (चुरु)

बुन्देला, श्री सुजान सिंह (झांसी)

बूटा सिंह सरदार (जालौर)

बैरवा, श्री बनवारी लाल (टोंक)

बैठा, श्री डूमर लाल (अररिया)

बैरागी, श्री बालकवि (मंदसौर)

बैरो, श्री ए० ई० टी० (नाम निर्देशित आंग्ल भारतीय

ब्रह्मदत्त, श्री (टिहरी गढ़वाल)

भ

भण्डारी, श्रीमती डी० के० (सिक्किम)

भक्त, श्री मनोरंजन (अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह)

भगत, श्री एच० के० एल० (पूर्वी दिल्ली)

भगत, श्री बी० आर० (आरा)

भट्टाचार्य, श्रीमती इन्दुमती (हुगली)

भरत सिंह, श्री (बाह्य दिल्ली)

भाटिया, श्री रघुनन्दन लाल (अमृतसर)

भारद्वाज, श्री परसराम (सारंगढ़)

भूपति, श्री जी० (पेद्दापल्ली)

भूमिज, श्री हरेन (डिब्रूगढ़)

भूरिया, श्री दिलीप सिंह (झाबुआ)

भोई, डा० कृपा सिंधु (सम्बलपुर)

भोये, श्री आर० एम० (धुले)

भोये, श्री एस० एस० (मालेगांव)

भोसले, श्री प्रतापराव बी० (सतारा)

म

मण्डल, श्री सनत कुमार (जयनगर)

मकवाना, श्री नरसिंह (धंधुका)

मलिक, श्री धर्मपाल सिंह (सोनीपत)

मलिक, श्री पूर्णचन्द (दुर्गापुर)

मलिक, श्री लक्ष्मण (जगतसिंहपुर)

मसुदल हुसैन श्री सैयद (मुर्शिदाबाद)

महन्ती, श्री बृजमोहन (पुरी)

महाजन, श्री वाई० एस० (जलगांव)

महावीर प्रसाद, श्री (बांसगांव)

महाता, श्री चित्त (पुरुलिया)

महालिंगम, श्री एम० (नागापट्टिनम)

महेन्द्र सिंह, श्री (गुना)

माधुरी सिंह, श्रीमती (पूर्णिया)

मानवेन्द्र सिंह, श्री (मथुरा)

माने, श्री आर० एस० (इचलकरांजी)

माने, श्री मुरलीधर (नासिक)

मार्तण्ड सिंह, श्री (रीवा)

मालवीय, श्री बापूलाल, (शाजापुर)

मावणि, श्रीमती पटेल रमाबेन रामजीभाई (राजकोट)

मिर्धा, श्री राम निवास (नागौर)

मिश्र, श्री उमाकान्त (मिर्जापुर)

मिश्र, श्री जी० एस० (सिवनी)

मिश्र, श्री नित्यानन्द (बोलनगिर)

मिश्र, श्री राम नगीना (सलेमपुर)

मिश्र, श्री विजय कुमार (दरभंगा)

मिश्र, श्री श्रीपति (मछलीशहर)

मिश्र, श्री सत्यगोपाल (तामलुक)

मिश्र, डा० प्रभात कुमार (जंजगीर)

मीणा, श्री राजकुमार (सवाई माधोपुर)

मीरा कुमार, श्रीमती (बिजनौर)

मुंडाकल, श्री जार्ज जोसफ (मुवत्तुपुजा)

मुखर्जी, श्रीमती गीता (पंसकुरा)

मुखोपाध्याय, श्री आनन्द गोपाल (आसनसोल)

मुत्तेमवार, श्री विलास (चिमूर)

मुरमू, श्री सिद्धलाल (मयूरभंज)

मुरुगाई, श्री ए० आर० (करूर)

मुशरान, श्री अजय (जबलपुर)

मूर्ति, श्री एम० वी० चन्द्रशेखर (कनकपुरा)

मूर्ति, श्री भट्टम श्रीराम (विशाखापत्तनम)

मेहता, श्री हरुभाई (अहमदाबाद)

मोतीलाल सिंह, श्री (सीधी)

मोदी, श्री विष्णु (अजमेर)

मोरे, प्रो० रामकृष्ण (खेड़)

मोहनदास, श्री के० (मुकुन्दपुरम)

य

यशपाल सिंह, श्री (सहारनपुर)

याजदानी, डा० गुलाम (रायगंज)

यादव, श्री आर० एन० (परभणी)

यादव, श्री कैलाश (जलेसर)

यादव, श्री डी० पी० (मुंगेर)

यादव, श्री बलराम सिंह (मैनपुरी)

यादव, श्री महावीर प्रसाद (माधीपुरा)

यादव, श्री राम सिंह (अलवर)

यादव, श्री विजय कुमार (नालन्दा)

यादव, श्री श्याम लाल (वाराणसी)

यादव, श्री सुभाष (खारगोन)

योगेश, श्री योगेश्वर प्रसाद (चतरा)

र

रंगनाथ, श्री के० एच० (चित्रदुर्ग)

रंगा, प्रो० एन० जी० (गुंटूर)

रघुराज सिंह, चौधरी (इटावा)

रत्नम, श्री एन० वेंकट (तेंनाली)

रणवीर सिंह, श्री (केसरगंज)

रथ, श्री सोमनाथ (आस्का)

रमैया, श्री बी० बी० (ऐलूरू)

रमैया, श्री सोडे (भद्राचलम)

राउत, श्री भोला (बगहा)

राज करन सिंह, श्री (सुल्तानपुर)

राजहंस, डा० गौरी शंकर (झंझारपुर)

राजू, श्री आनन्द गजपति (बोबिली)

राजू, श्री विजय कुमार (नरसापुर)

राजेश्वरन, डा० वी० (रामनाथपुरम)

राठवा, श्री अमर सिंह (छोटा उदयपुर)

राठोड़, श्री उत्तम (हिंगोली)

राम, श्री राम रतन (हाजीपुर)

राम, श्री रामस्वरूप (गया)

राम अवध प्रसाद, श्री (बस्ती)

रामचन्द्रन, श्री मुल्लापल्ली (कन्नानोर)

राम समुझावन, श्री (सैदपुर)

राम धन, श्री (लालगंज)

रामपाल सिंह, श्री (अमरोहा)

राम प्रकाश, चौधरी (अम्बाला)

राम बहादुर सिंह, श्री (छपरा)

राममूर्ति, श्री के० (कृष्णागिरि)

रामाश्रय प्रसाद सिंह, श्री (जहानाबाद)

रामुलू, श्री एच० जी० (कोप्पल)

रामूवालिया, श्री बलवन्त सिंह (संगरूर)

राय, श्री आई० रामा (कासरगोड़)

राय, श्री राज कुमार (घोसी)

राय, श्री रामदेव (समस्तीपुर)

राय, श्री डा० सुधीर (बर्दवान)

रायप्रधान, श्री अमर (कूच बिहार)

राव, श्री ए० जे० वी० बी० महेश्वर
(अमलापुरम)

राव, श्री के० एस० (मछलीपतनम)

राव, श्री जगन्नाथ (बरहामपुर)

राव, डा० जी० विजयरामा (सिद्दिपेट)

राव, श्री जे० चोक्का (करीमनगर)

राव, श्री जे० वेंगल (खम्मम)

राव, श्री पी० वी० नरसिंह (रामटेक)

राव, श्री वी० शोभनाद्रीश्वर (विजयवाड़ा)

राव, श्री बी० कृष्ण (चिकबल्लापुर)

राव, श्री श्रीहरि (राजामुन्द्री)

रावणी, श्री नवीन (अमरेली)

रावत, श्री कमला प्रसाद (बाराबंकी)

रावत, श्री प्रभुलाल (बांसवाड़ा)

रावत, श्री हरीश (अल्मोड़ा)

रियान, श्री बाजूबन (त्रिपुरा पूर्व)

रेड्डी, श्री ई० अय्यप्पू (कुरनूल)

रेड्डी, श्री के० रामचन्द्र (हिन्दूपुर)

रेड्डी, श्री सी० जंगा (हनमकोंडा)

रेड्डी, डो० एन० (कडप्पा)

रेड्डी, श्री बैजावाड़ा पपी (ओंगोल)

रेड्डी, श्री मानिक (मेडक)

रेड्डी, श्री बी० एन० (मिरयालगुडा)

रेड्डी, श्री एम० सुब्बा (नन्दयाल)

रेड्डी, श्री एम० रघुमा (नालगोंडा)

रेड्डी, श्री सी० माधव (आदिलाबाद)

रेड्डी, श्री एस० जयपाल (महबूबनगर)

ल

लच्छी राम, चौधरी (जालौन)

लाल डुहोमा, श्री (मिजोरम)

लाहा, श्री आशुतोष (दमदम)

लोवांग, श्री वांगफा (अरुणाचल पूर्व)

व

वन, श्री दीप नारायण (बलरामपुर)

वनकर, श्री पूनमचन्द मीठाभाई (पाटन)

वर्मा, श्रीमती ऊषा (खेरी)

वर्मा, डा० सी० एस० (खगरिया)
वाडियर, श्री श्रीकांत दत्त नरसिंहराज (मैसूर)
वालिया, श्री चरनजीत सिंह (पटियाला)
वासनिक, श्री मुकुल (बुलढाना)
विजयराघवन, श्री वी० एस० (पालघाट)
वीरसेन, श्री (खुर्जा)
वेंकटेश, डा० वी० (कोलार)
वेंकटेशन, श्री पी० आर० एस० (कुड्डालोर)
वैराले, श्री मधुसूदन (अकोला)
व्यास, श्री गिरधारी लाल (भीलवाड़ा)

श

शंकरा गौडा, श्री के० वी० (मांडयापा)
शंकरानन्द, श्री बी० (चिकोड़ी)
शक्तावत, प्रो० निर्मला कुमारी (चित्तौड़गढ़)
शमिन्दर सिंह, श्री (फरीदकोट)
शर्मा, श्री चिरंजी लाल (करनाल)
शर्मा, श्री नन्द किशोर (बालाघाट)
शर्मा, श्री नवल किशोर (जयपुर)
शर्मा, श्री प्रताप भानु (विदिशा)
शांति देवी, श्रीमती (सम्भल)
शास्त्री, श्री हरिकृष्ण (फतेहपुर)
शाह, श्री अनूपचन्द (बम्बई उत्तर)
शाहबुद्दीन, सैयद (किशनगंज)
शाही, श्री ललितेश्वर (मुजफ्फरपुर)
शिंगडा, श्री डी० बी० (दहानू)
शिवेन्द्र बहादुर सिंह, श्री (राजनन्दगांव)
शुक्ल, श्री विद्याचरण (महासमुन्द)
शेरवानी, श्री सलीम आई० (बदायूं)
शैलेश, डा० बी० एल० (चैल)
श्रीनिवास प्रसाद, श्री वी० (चामराजनगर)

स

संकटा प्रसाद, डा० (मिसरिख)
संखवार, श्री आशकरण (घाटमपुर)
संगमा, श्री पी० ए० (तुरा)
संतोष कुमार सिंह, श्री (आजमगढ़)
सईद, श्री पी० एम० (लक्षद्वीप)
सकर गयम, श्री कालीचरण (खंडवा)
सत्येन्द्र चन्द्र, श्री (नैनीताल)
सान्याल, श्री मानिक (जलपाईगुड़ी)
सम्बू, श्री सी० (बापताला)
सलाउद्दीन, श्री (गोड्डा)
साठे, श्री वसंत (वर्धा)
सामंत, डा० दत्ता (बम्बई दक्षिण मध्य)
साहा, श्री अजित कुमार (विष्णुपुर)
साहा, श्री गदाधर (बीरभूम)
साही, श्रीमती कृष्णा (बेगूसराय)
साहु, श्री शिव प्रसाद (रांची)
सिंगरावडीवेल, श्री एस० (तंजावूर)
सिंह, श्री अतीशचन्द्र (बरहामपुर)
सिंह, श्री एन० टोम्बी (आंतरिक मणिपुर)
सिंह, श्रीमती किशोरी (वैशाली)
सिंह, श्री कमला प्रसाद (जोनपुर)
सिंह, श्री कृष्ण प्रताप (महाराजगंज,
सिंह, श्री के० एन० (हापुड़)
सिंह, श्री चन्द्रप्रताप नारायण (पडरौना)
सिंह, श्री डी० जी० (शाहाबाद)

सिंह, श्री भानु प्रताप (पीलीभीत)

सिंह, श्री लाल विजय प्रताप (सरगुजा)

सिंह, श्री एस० डी० (धनबाद)

सिंह, सत्येन्द्र नारायण (औरंगाबाद)

सिंहदेव, श्री के० पी० (ढेंकानाल)

सिद्दनाल, श्री एस० बी० (बेलगाम)

सिद्दीक, श्री हाफिज मोहम्मद (मुरादाबाद)

सिन्धिया, श्री माधवराव (ग्वालियर)

सिन्हा, श्रीमती रामदुलारी (शिवहर)

सुन्दर लाल, श्री (हरिद्वार)

सुन्दर सिंह, चौधरी (फिल्लौर)

सुखराम, श्री (मंडी)

सुखाड़िया, श्रीमती इन्दुबाला (उदयपुर)

सुखबन्स कौर, श्रीमती (गुरदासपुर)

सुनील दत्त, श्री (बम्बई उत्तर पश्चिम)

सुन्दरराज, श्री एन० (पुदुकोट्टई)

सुन्दरराजन, श्री एन० (शिवकाशी)

सुब्रमन, श्री ए० जी० (मदुरै)

सुमन, श्री रामप्यारे (अकबरपुर)

सुरेन्द्रपाल सिंह, श्री (बुलन्दशहर)

सुल्तानपुरी, श्री के० डी० (शिमला)

सूर्यवंशी, श्री नरसिंह (बीदर)

सेट, श्री अजीज (धारवाड़ दक्षिण)

सेट, श्री इब्राहिम सुलेमान (मंजेरी)

सेठी, श्री अनन्त प्रसाद (भद्रक)

सेठी, श्री प्रकाश चन्द्र (इन्दौर)

सेन, श्री भोला नाथ (कलकत्ता दक्षिण)

सेन, श्री ए० के० (कलकत्ता उत्तर पश्चिम)

सेल्वेन्द्रन, श्री पी० (पेरियाकुलम)

सैकिया, श्री गोकुल (लखीमपुर)

सैकिया, श्री एम० आर० (नवगांव)

सोज, प्रो० सैफुद्दीन (बारामूला)

सोढी, श्री मानकूराम (बस्तर)

सोमू, श्री एन० वी० एन० (मद्रास उत्तर)

सोरन, श्री हरिहर (क्योंझर)

सोलंकी, श्री कल्याण सिंह (आंवला)

सोलंकी, श्री नटवर सिंह (कापड़वंज)

स्वामी, श्री कटूरी नारायण (नरसारावपेट)

स्वामी, श्री डी० नारायण (अनन्तपुर)

स्वामी प्रताप सिंह, श्री (हमीरपुर)

स्पैरो, श्री आर० एस० (जालन्धर)

स्वैल, श्री जी० जी० (शिलांग)

ष

षण्मुख, श्री ए० सी० (वेल्लोर)

षण्मुख, श्री पी० (पांडिचेरी)

ह

हंसदा, श्री मतिलाल (झाड़ग्राम)

हन्नान मोल्लाह, श्री (उलूबेरिया)

हरद्वारी लाल, श्री (रोहतक)

हरपाल सिंह, श्री (कुरुक्षेत्र)

हाल्दर, प्रो० एम० आर० (मथुरापुर)

हेम ब्रम, श्री सेत (राजमहल)

लोक सभा

अध्यक्ष

डा० बलराम जाखड़

उपाध्यक्ष

श्री एम० तम्बि दुराई

सभापति तालिका

श्रीमती बसवराजेश्वरी

श्री जैनुल बशर

श्री शरद दिघे

श्री वक्कम पुरुषोत्तमन

श्री सोमनाथ रथ

श्री निस्संकारा राव वेंकटरत्नम

महासचिव

डा० सुभाष काश्यप

भारत सरकार
मंत्रिमंडल के सदस्य

प्रधान मंत्री तथा रक्षा, पर्यावरण और वन, कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन, योजना, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, परमाणु ऊर्जा, इलैक्ट्रानिकी, महासागर विकास, अन्तरिक्ष मंत्रालयों/विभागों के प्रभारी तथा अन्य उन विषयों के प्रभारी जो किसी मंत्रिमंडल स्तर के मंत्री या राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) को नहीं दिए गए हैं।	श्री राजीव गांधी
मानव संसाधन विकास मंत्री तथा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री	श्री पी० वी० नरसिंह राव
वित्त मंत्री	श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह
गृह मंत्री	सरदार बूटा सिंह
विदेश मंत्री तथा वाणिज्य मंत्री	श्री पी० शिव शंकर
उद्योग मंत्री तथा पैट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री	श्री नारायण दत्त तिवारी
कृषि मंत्री	डा० जी० एस० ढिल्लों
कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्री	श्री ए० बी० ए० गनी खान चौधरी
शहरी विकास मंत्री	श्री अब्दुल गफूर
विधि और न्याय मंत्री	श्री ए० के० सेन
जल संसाधन मंत्री	श्री बी० शंकरानन्द
संसदीय कार्य मंत्री तथा खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्री	श्री एच० के० एल० भगत
इस्पात और खान मंत्री	श्री कृष्ण चन्द्र पंत
परिवहन मंत्री	श्रीमती मोहसिना किदवई
पर्यटन मंत्री	मुफ्ती मोहम्मद सईद
ऊर्जा मंत्री	श्री बसन्त साठे

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

वस्त्र मंत्रालय के (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री	श्री खुर्शीद आलम खां
श्रम मंत्रालय के (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री	श्री पी० ए० संगमा
कल्याण मंत्रालय की (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री	डा० राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी
संचार मंत्रालय के (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री	श्री राम निवास मिर्धा

राज्य मंत्री

सूचना और प्रसारण मंत्रालय के (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री	श्री वी० एन० गाडगिल
योजना मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री ए० के० पांजा
आंतरिक सुरक्षा विभाग में राज्य मंत्री	श्री अरुण नेहरू
रक्षा अनुसंधान और विकास विभाग में राज्य मंत्री	श्री अरुण सिंह
व्यय विभाग में राज्य मंत्री	श्री बी० के० गढ़वी
वाणिज्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री ब्रह्म दत्त
शहरी विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री दलबीर सिंह
विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री एडुआर्डो फंलोरी
राज्य विभाग में राज्य मंत्री	श्री गुलाम नबी आजाद
विधि और न्याय मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री एच० आर० भारद्वाज
नागर विमानन विभाग में राज्य मंत्री	श्री जगदीश टाइटलर

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री जनार्दन पुजारी
सरकारी उद्यम विभाग में राज्य मंत्री	प्रो० के० के० तिवारी
उर्वरक विभाग में राज्य मंत्री	श्री के० नटवर सिंह
शिक्षा और संस्कृति विभागों में राज्य मंत्री	श्रीमती कृष्णा साही
विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री के० आर० नारायणन
रेल विभाग में राज्य मंत्री	श्री माधवराव सिन्धिया
युवा कार्य और खेल तथा महिला और बाल विकास विभागों में राज्य मंत्री	श्रीमती मारग्रेट अल्वा
औद्योगिक विकास विभाग में राज्य मंत्री	श्री एम० अरुणाचलम
कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री और गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री पी० चिदम्बरम
ग्रामीण विकास विभाग में राज्य मंत्री	श्री रामानन्द यादव
रसायन और पैट्रो-रसायन विभाग में राज्य मंत्री	श्री आर० के० जयचन्द्र सिंह
जल भू-तल परिवहन विभाग में राज्य मंत्री	श्री राजेश पाइलट
खान विभाग में राज्य मंत्री	श्रीमती राम दुलारी सिन्हा
पर्यटन मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री संतोष मोहन देव
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री	कुमारी सरोज खापर्डे
संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्रीमती शीला दीक्षित
विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा महासागर विकास, परमाणु ऊर्जा, इलैक्ट्रानिकी और अंतरिक्ष विभागों में राज्य मंत्री	श्री शिवराज वी० पाटिल
संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री सीताराम केसरी
रक्षा उत्पादन और रक्षा पूर्ति विभाग में राज्य मंत्री	श्री सुखराम

विद्युत विभाग में राज्य मंत्री तथा पैट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्रीमती सुशीला रोहतगी
कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री	श्री योगेन्द्र मकवाना
पर्यावरण और वन मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री जियाउर्रहमान अंसारी

उप-मंत्री

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में उप मंत्री	श्री बीरेन सिंह एंगती
कल्याण मंत्रालय में उप मंत्री	श्री गिरिधर गोमांगो
परिवार कल्याण विभाग में उप मंत्री	श्री एस० कृष्ण कुमार

खण्ड 18, आठवीं लोक सभा के छठे सत्र का प्रथम दिन अंक 1

लोक सभा

गुरुवार, 17 जुलाई, 1986/26 आषाढ़, 1908 (शक)

लोक सभा 11 बजे समवेत हुई।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

निधन संबंधी उल्लेख

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, पिछली बार जब हम बजट सत्र में मिले थे उसके बाद व्यतीत हुए थोड़े से समय में अनेक दुःखद घटनायें हुई हैं जिसमें श्री जगजीवन राम की मृत्यु भी सम्मिलित है, जोकि इस सभा के वरिष्ठतम सदस्यों में से एक थे। हम अभी श्री जगजीवन राम की मृत्यु के शोक से उभरे भी नहीं थे कि हमें चार दिन बाद एक अन्य वर्तमान सदस्य श्री चन्द्र शेखर सिंह, जोकि पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री थे, की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ। इस अल्प अवधि में हमारे सात भूतपूर्व साथियों अर्थात् श्री ए० वैरावन सेरूवाई, श्री ओम प्रकाश त्यागी, डा० के०एल० राव, सर्वश्री जोगेन्द्र सेन, नन्द किशोर दास, सी० एच० भाभा और लक्ष्मी नारायण भंज देव की भी मृत्यु हुई है।

श्री जगजीवन राम लोक सभा के वर्तमान सदस्य थे जो बिहार के सासाराम चुनाव क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे। वह 1946-50 के दौरान केन्द्रीय विधान सभा तथा संविधान सभा, के और 1950-52 के दौरान प्रोविजनल पार्लियामेंट के सदस्य थे तथा 1952 से लेकर अपनी मृत्यु तक लगातार इस सभा के सदस्य रहे। इससे पहले वह 1936-40 के दौरान बिहार विधान परिषद और बिहार विधान सभा के सदस्य रहे। अत: श्री जगजीवन राम को लगातार 40 वर्षों तक की लम्बी अवधि तक केन्द्रीय विधान मंडल के सदस्य के रूप में कार्य करने का अनोखा गौरव प्राप्त है।

श्री जगजीवन राम ने 1946 से 1963 तक जब उन्होंने कामराज योजना के तहत त्यागपत्र दिया था, लगातार केन्द्रीय मंत्रीमंडल में रहे और उन्होंने विभिन्न महत्वपूर्ण मंत्रालयों का पद भार संभाला। उन्हें 1966 में फिर से केन्द्रीय मंत्रीमंडल में शामिल किया गया था और उन्होंने 1979 तक कई महत्वपूर्ण मंत्रालयों का कार्यभार संभाला था। वह जनवरी से जुलाई, 1979 तक उपप्रधान

मंत्री के पद पर रहे और उसके बाद उसी वर्ष लोक सभा में विपक्ष के नेता रहे। जिस किसी विभाग को संभाला वहां श्री जगजीवन राम ने उन पर एक कुशल प्रशासक और मामलों में निर्णय लेने में कुशल व्यक्ति की छाप अंकित की।

एक कुशल स्वतंत्रता सेनानी के रूप में श्री जगजीवन राम ने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय हिस्सा लिया। उन्होंने अकेले सत्याग्रह किए तथा जेल गये।

एक निष्ठावान राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर उन्होंने समाज सुधार आन्दोलन में भाग लिया। उनका जीवन हरिजनों और समाज के कमजोर वर्गों के लिए समर्पित था। अनुसूचित जातियों के मान्य नेता के रूप में वह अप्रैल, 1946 में मंत्रीमंडल मिशन के समक्ष गये थे। उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा शुरू किये गए छुआ-छूत विरोधी आन्दोलन में भाग लिया। बाबूजी, जैसा कि उन्हें प्यार से कहा जाता था, पिता समान थे और दलित तबकों के लोग संकट में उनके पास सहायता के लिए जाते थे।

कृषि श्रमिकों के दु:खों को देखकर उन्होंने 1937 में बिहार प्रोविंशियल खेत मजदूर सभा बनायी थी। उन्होंने मजदूर संघ आन्दोलनों में भी गहरी दिलचस्पी ली और वह बहुत से श्रमिक संघों के अध्यक्ष रहे।

उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं और उन्हें कई विश्वविद्यालयों द्वारा 'आनरेरी डाक्टरेट' की उपाधि से सम्मानित किया गया था। उन्होंने दूर-निकट की खूब यात्राएं की थीं। श्री राम ने विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में कई भारतीय प्रतिनिधिमण्डलों का नेतृत्व किया था। वह अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ की 'प्रीपरेटरी एशिया रीजनल कान्फ्रेंस' के अध्यक्ष थे जो अक्तूबर-नवम्बर, 1947 में नई दिल्ली में हुई थी। अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ, 1950 के 33वें सत्र में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के नेता थे जब उन्हें सर्वसम्मति से सम्मेलन का अध्यक्ष भी चुना गया था।

श्री जगजीवन राम का निधन 78 वर्ष की आयु में 6 जुलाई, 1986 को नई दिल्ली में हुआ। उनके निधन से देश ने एक उत्कृष्ट संसद सदस्य, एक विख्यात राजनेता, एक चतुर प्रशासक और इससे भी अधिक एक देशभक्त, जिसने अपना संपूर्ण जीवन जनसेवा में लगाया, खो दिया है।

श्री चन्द्र शेखर सिंह 1985 से बिहार के बांका निर्वाचन क्षेत्र से लोक सभा के वर्तमान सदस्य थे। वह 1980-83 के दौरान सातवीं लोक सभा के भी सदस्य थे।

एक प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी श्री सिंह ने छोटी आयु से ही स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया। एक कृषक और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान में गहरी रुचि ली।

एक योग्य सांसद के रूप में, श्री चन्द्र शेखर सिंह पहली बार 1952 में बिहान विधान सभा के लिए चुने गये थे, और 10 वर्ष तक उस विधान सभा के सदस्य रहे। 1969 में वे पुन: राज्य विधान

सभा के लिए चुने गये थे और उसी वर्ष उन्हें मन्त्री बनाया गया और 1975 तक मंत्री पद पर रहे। 1980 में वे पहली बार संसद के लिए चुने गये थे और श्री चन्द्र शेखर सिंह को 1983 में केन्द्रीय मंत्रीमंडल में राज्य मंत्री नियुक्त किया गया था लेकिन उन्हें जल्दी ही अपने राज्य में मुख्य मंत्री का पद संभालने के लिए वापिस जाना पड़ा। 1985 में केन्द्रीय मंत्रीमंडल में राज्य मंत्री के रूप में उन्हें फिर से सम्मिलित किया गया था। लोक सभा में फिर से निर्वाचित होकर आने के बाद उन्हें जनवरी, 1986 में पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस के राज्य मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया था।

श्री चन्द्र शेखर सिंह एक योग्य प्रशासक थे और वह अपनी अत्यधिक कार्य-कुशलता के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने मजदूर संघों की गतिविधियों में भी काफी रुचि ली और 1949-50 में अखिल भारतीय रेल कर्मचारी संघ की शाखा इकाई के अध्यक्ष भी रहे।

श्री चन्द्र शेखर सिंह का निधन 59 वर्ष की आयु में 9 जुलाई, 1986 को नई दिल्ली में हुआ।

श्री ए० वैरावन सेरुवई तमिलनाडु के तंजौर निर्वाचन क्षेत्र से 1957-62 के दौरान दूसरी लोक सभा के सदस्य थे।

वह पेशे से कृषक थे। श्री सेरुवई एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने 1942 में स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया।

श्री वैरावन सेरुवई का 67 वर्ष की आयु में 4 मई, 1986 को निधन हुआ।

श्री ओम प्रकाश त्यागी उत्तर प्रदेश के बहराइच निर्वाचन क्षेत्र से 1967-70 और 1977-79 के दौरान क्रमशः चौथी और छठी लोक सभा के सदस्य थे। वह 1972-77 के दौरान राज्य सभा के भी सदस्य रहे।

श्री त्यागी ने, जो एक वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे, छोटी उम्र में स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया और जेल गये। एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने 1943-44 में बंगाल के सूखे से प्रभावित लोगों के लिए एक सहायता दल का नेतृत्व किया था। बाद में 1947 में आर्य समाज के अन्तर्गत दिल्ली में और पश्चिम बंगाल के कई स्थानों पर शरणार्थियों की सहायता हेतु उन्होंने कई सहायता केन्द्रों का संचालन किया। उन्होंने नैरोबी में 1964 में पूर्वी अफ्रीका के बेसहारा लोगों के लिए एक 'दयानन्द होम' शुरू किया तथा 1971 में अन्तर्जातीय विवाह आन्दोलन की शुरूआत की।

श्री त्यागी ने आदिवासी लोगों के उत्थान में भी गहरी रुचि दिखाई। श्री त्यागी जिन्होंने दूर-निकट के स्थानों की खूब यात्राएं की थीं कई पुस्तकों के लेखक भी थे।

श्री त्यागी का निधन 74 वर्ष की आयु में 10 मई, 1986 को नई दिल्ली में हुआ।

डा० के० एल० राव आन्ध्र प्रदेश के विजयवाड़ा निर्वाचन क्षेत्र से 1962-67, 1967-70

और 1971-77 के दौरान क्रमशः तीसरी, चौथी और पांचवीं लोक सभा के सदस्य थे। वह कई वर्ष तक केन्द्रीय मंत्रीमंडल में सिंचाई और विद्युत मंत्री रहे।

डा० राव संरचना इंजीनियरी के विश्व विख्यात विशेषज्ञ थे और उन्होंने केन्द्रीय जल तथा विद्युत आयोग के (नमूना और अनुसंधान) सदस्य के रूप में कार्य किया तथा उन्होंने देश के बहुत से बांधों के नमूने तैयार किए जिसमें हीराकुंड, नागार्जुनसागर इत्यादि सम्मिलित हैं। सूखे और बाढ़ की राष्ट्रीय समस्या को हल करने के लिए 'नेशनल वाटर ग्रिड, जिसे गंगा-कावेरी सम्पर्क के नाम से जाना जाता है, का प्रस्ताव उन्होंने दिया था।

डा० राव ने विस्तृत दौरे किए थे और राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों के विभिन्न पदों पर कार्य किया। वह 'इंटरनेशनल सोसायटी आफ सोशियल मकेनिक्स एण्ड फाउन्डेशन इंजनीयरिंग' के उपाध्यक्ष रहे तथा आंध्र प्रदेश में चीफ इंजीनियर रहे। उन्हें इंस्टीच्यूट आफ इंजीनियर्स (इंडिया)' में सर्वोत्तम पेपर प्रकाशित करने के लिए तीन बार राष्ट्रपति पुरस्कार मिले थे। 1963 में उन्हें पदम भूषण से सुशोभित किया गया।

डा० राव का निधन 84 वर्ष की आयु में 18 मई, 1986 को हैदराबाद में हुआ।

श्री जोगिन्दर सेन हिमाचल प्रदेश के मंडी निर्वाचन क्षेत्र से 1957-62 के दौरान दूसरी लोक सभा के सदस्य थे।

श्री सेन एक कुशल प्रशासक थे और ब्राजील में भारत के राजदूत के पद पर रहे। वह पूर्व मंडी रियासत के भूतपूर्व शासक थे।

श्री सेन का निधन 82 वर्ष की आयु में 16 जून, 1986 को मण्डी में हुआ।

श्री नन्द किशोर दास उड़ीसा राज्य से 1946-52 के दौरान संविधान सभा और अन्तरिम संसद के सदस्य थे। पहले वे 1927-29 के दौरान बंगाल और उड़ीसा विधान परिषद के सदस्य थे।

एक अनुभवी सार्वजनिक व्यक्ति के तौर पर श्री दास ने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया। एक योग्य सांसद के तौर पर उन्होंने 1936 में उड़ीसा विधान सभा के उपाध्यक्ष पद पर कार्य किया।

श्री दास का निधन 91 वर्ष की आयु में 28 जून, 1986 को कटक में हुआ।

श्री सी० एच० भाभा बिहार राज्य से 1948-49 के दौरान संविधान सभा के सदस्य थे। उससे पहले वे 1946 में अन्तरिम सरकार में मंत्री तथा 1947-48 के दौरान केन्द्रीय मंत्रीमन्डल में मंत्री थे।

श्री भाभा बैंकिंग में कई वर्षों तक विभिन्न पदों पर कार्य करते रहे। वह नेशनल शिपिंग बोर्ड के चेयरमैन के पद पर भी रहे। उन्होंने व्यापक रूप से यात्राएं की थीं तथा वह 1947 में हवाना में हुए विश्व व्यापार सम्मेलन के भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के नेता थे।

श्री भाभा का निधन 76 वर्ष की आयु में 29 जून, 1986 को लन्दन में हुआ।

श्री लक्ष्मी नारायण भंजदेव उड़ीसा के क्योंझर निर्वाचन क्षेत्र से 1957-67 के दौरान दूसरी और तीसरी लोक सभा के सदस्य थे। पहले वे 1949-57 के दौरान उड़ीसा विधान सभा के सदस्य थे।

वह अगस्त, 1945 से जून, 1947 तक भूतपूर्व क्योंझर राज्य के राजस्व मन्त्री रहे और उसके बाद दिसम्बर, 1947 तक वहां के मुख्य मंत्री रहे।

श्री भंजदेव एक विद्वान व्यक्ति थे और वह 'आनरेबल सोसायटी आफ दी मिडिल टैम्पल लन्दन' के सदस्य थे। व्यापक यात्राएं किए हुए श्री भंजदेव को रायल इक्नोमिक सोसायटी एण्ड रायल सोसायटी आफ आर्ट्स, लन्दन' का फैलो नामांकित होने का सम्मान प्राप्त था। वह उत्कल विश्वविद्यालय की सीनेट बनने के समय से ही लेकर फरवरी, 1948 तक वह उसके सदस्य रहे। श्री देव उड़ीसा स्टेट रैडक्रास सोसायटी के भी पदाधिकारी रहे।

श्री भंजदेव का निधन 74 वर्ष की आयु में 9 जुलाई, 1986 को हुआ।

वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव श्री लि दुआन के निधन पर भी हम अपना गहरा शोक प्रकट करते हैं। मैं आशा करता हूं कि यह सभा वियतनाम के लोगों को जो क्षति हुई है उसके लिए उन्हें अपनी संवेदना भेजने में मेरे साथ हैं।

प्रधान मन्त्री (श्री राजीव गांधी): माननीय अध्यक्ष महोदय, बाबूजी के निधन से राष्ट्र को भारी क्षति हुई है। वह अपनी पीढ़ी के सबसे महान नेताओं में से थे। पहले स्वतंत्रता सेनानी के रूप में और फिर आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में। उन्होंने गत 50 वर्ष से अधिक समय तक हमारे राष्ट्र की अपार सेवा की। उन्हें हमारे समाज के सभी वर्गों से सम्मान मिला। वह केवल बिहार या हरिजनों के ही नहीं थे, वह भारत के नेता थे। उनका व्यक्तित्व, पांडित्य, राजनैतिक और संसदीय कार्य में कुशलता, प्रशासनिक क्षमता ने भारत के निर्माण में, हमारे समाज को एकजुट करने, हमारे देश को एकता के सूत्र में बांधने और सुदृढ़ बनाने में योगदान दिया। उन्होंने हमारे देश के कई महत्त्वपूर्ण विभागों को संभाला और वे हर क्षेत्र में सफल रहे। यह सभा उनकी दूरदृष्टि, उनके अनुभव, विनोदी स्वभाव और मानवता को सदा याद रखेगी।

अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं उनकी पत्नी श्रीमती इन्द्राणी देवीराम, श्रीमती मीरा कुमार और परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं।

दूसरी दुःखद घटना यह है कि बाबूजी के निधन के कुछ दिन बाद श्री चन्द्रशेखर सिंह जी का निधन हो गया। उनकी बीमारी का पता उस समय चला जब वह लाइलाज हो चुकी थी। वह एक

[श्री राजीव गांधी]

सच्चे व्यक्ति थे और देश के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। उन्हें केन्द्र में मंत्री के रूप में और बिहार में मुख्यमंत्री के रूप में बड़ी ख्याति मिली। हम उनकी प्रशासनिक कुशलता और प्रखर बुद्धि से वंचित हो गये हैं। उन्हें और कई वर्षों तक देश की सेवा करनी थी। हमें श्रीमती मनोरमा सिंह और उनके परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति पूरी सहानुभूति है।

डा० के० एल० राव एक प्रख्यात अभियंता थे और हमारी अनेक प्रमुख पनबिजली परियोजनाओं पर उन्होंने अपनी छाप छोड़ी है। एक सांसद और मंत्री होने के नाते उन्होंने देश के विकास में काफी योगदान दिया। शिक्षा और समाज कल्याण तथा मानव संसाधन विकास में उनकी रुचि को हमेशा याद किया जाएगा। आंध्र प्रदेश तथा देश एक महान नेता से वंचित हो गया है।

आपके माध्यम से मेरा अनुरोध है कि हमारी संवेदनाएं स्वर्गीय सेकवाई, श्री ओम प्रकाश त्यागी, श्री जोगिन्दर सेन, श्री नन्द किशोर दास, श्री सी० एच० भाभा और श्री लक्ष्मी नारायण भंजदेव के परिवारों को भेज दी जाएं।

हमें वियतनामी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव श्री ली दुआन के निधन की भी सूचना मिली है। वह एक महान क्रांतिकारी और वियतनाम का पुर्ननिर्माण करने वाले थे। वह भारत के अच्छे मित्र थे। पिछले वर्ष जब मैं वियतनाम गया था तो मेरी उनसे मुलाकात हुई थी। उन्होंने 1984 में भारत की यात्रा की थी। उनके निधन से भारत और वियतनाम को भारी हानि हुई है।

श्री सी० माधव रेड्डी (आदिलाबाद) : अध्यक्ष महोदय, मैं सदन के नेता, प्रधानमंत्री की भावनाओं से सहमत हूं, और मुझे भी बाबू जगजीवन राम के निधन से देश के लाखों लोगों के समान भारी दु:ख हुआ है।

बाबू जगजीवन राम 40 वर्षों से भी अधिक समय तक देश की राजनीति पर छाये रहे और जहां भी उन्होंने कार्य किया, जो भी विभाग संभाला, वहीं उन्होंने अपनी छाप छोड़ी। उनकी कार्य-कुशलता, समर्पण भाव, ईमानदारी और पददलितों के प्रति सेवा भाव के कारण उन्हें आने वाले कई दशकों तक याद रखा जाएगा।

बाबूजी जैसे महान नेता को याद रखने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि करोड़ों पददलितों के लिए की गई उनकी सेवा को हम याद रखें। आज जब देखते हैं कि कमजोर वर्गों पर अत्याचार किया जा रहा है तो हमें बड़ी शर्म महसूस होती है। हम सभी को मरना तो है। हमारी मृत्यु दुबारा नहीं होगी। लेकिन मुझे लगता है कि यदि इस देश में हरिजनों और कमजोर वर्गों पर अत्याचार जारी रहे तो बाबू जगजीवन राम की रोज मौत होगी। आज हमें समाज के कमजोर वर्गों की रक्षा के लिए स्वयं को समर्पित कर देना चाहिए।

मुझे पहली संसद के आरंभिक दिनों की याद है, जब मैं एक सदस्य था और बाबूजी एक युवा मंत्री थे। हम उनके काम करने का तरीका देखा करते थे। मुझे आज भी याद है कि वह किस तरह

बिना तकनीकी बातों की आड़ लेकर जैसाकि अन्य मन्त्री करते थे। प्रश्नों का उत्तर देते थे। वह जितनी बात पूछी जाती थी, उससे अधिक जानकारी देते थे। उनके बोलने के तरीके ने हमें बहुत प्रोत्साहन दिया। मुझे याद है एक बार श्री श्याम प्रसाद मुखर्जी, मैं जिनके साथ उनकी तरफ बैठा था और जब मैंने बाबूजी की बात में व्यवधान डालना चाहा तो उन्होंने मेरी कमीज पकड़ कर कहा कि उनकी बात में बाधा मत डालो क्योंकि तुम ऐसा नहीं कर सकते। आप पंडित जवाहर लाल नेहरू को कुछ कह सकते हैं पर उन्हें नहीं। उनका इतना योगदान था। मुझे उनके साथ निजी बातचीत की भी याद है जब उन्होंने कहा था कि जब यह देश हरिजन प्रधानमंत्री को चुनना स्वीकार कर लेगा तब वही इस देश के प्रधानमंत्री होंगे। उन्होंने उनके लिए ऐसा कहा था और उनकी भविष्यवाणी काफी हद तक सही निकली। यद्यपि देश उन्हें प्रधानमन्त्री के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार था लेकिन राजनतिक बाधाओं के कारण ऐसा नहीं हो सका। मुझे विश्वास है कि यदि वह इस देश के प्रधानमन्त्री होते तो इस देश का इतिहास ही दूसरा होता।

महोदय, मैं अपने और अपने दल की ओर से इस महान आत्मा को श्रद्धांजली अर्पित करता हूं जो 40 वर्षों तक राजनीति के क्षेत्र में रहे। मैं डा० के० एल० राव के निधन पर भी संवेदना व्यक्त करता हूं। वह एक महान अभियंता थे। मैं श्री चन्द्र शेखर सिंह के निधन पर संवेदना व्यक्त करता हूं। वह एक महान प्रशासक, मनीषी और विद्वान थे। मैं उन अनेक सदस्यों तथा भूतपूर्व सदस्यों के प्रति भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिनका इस बीच निधन हो गया।

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : अध्यक्ष महोदय, बाबू जगजीवन राम के निधन से एक पीढ़ी का अन्त हो गया है, एक सच्ची गांधीवादी पीढ़ी का अन्त हो गया है। समाज के निचले वर्ग में जन्मे बाबूजी ने हमारे देश की राजनीति में 50 वर्ष से भी अधिक समय तक सक्रिय और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपने छात्र जीवन में भी उन्होंने पददलितों के उत्थान के लिए और समाज में परिवर्तन लाने के लिए आंदोलनों में सक्रिय भाग लिया। जब वह बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में छात्र थे तो उन्होंने सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए अनुसूचित जातियों को संगठित किया। वह स्वतंत्रता संग्राम के भी प्रमुख नेता थे। ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने उन्हें अनेक बार जेल में डाला। वह पददलितों तथा हमारे समाज के सामाजिक भेदभाव से पीड़ित लोगों के प्रति हमेशा चिंतित रहते थे। जब कभी किसी के साथ अन्याय होता तो वह कभी विरोध करने से हिचकिचाते नहीं थे—चाहे वह सरकार में हों या न हों। अपने पूरे जीवन में बाबूजी ने हमारे समाज के निर्धन हरिजनों और कमजोर वर्गों को जगाने और उन्हें उनकेअ धिकारों से उन्हें अवगत कराने का प्रयत्न किया। लेकिन दुर्भाग्य से हमारे देश में आज भी सामाजिक अन्याय, अस्पृश्यता और भेदभाव विद्यमान है जिसके लिए बाबूजी पूरा जीवन लड़ते रहे। बाबू जगजीवन राम को श्रद्धांजलि देने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि सामाजिक परिवर्तन लाने, सामाजिक अन्याय तथा अस्पृश्यता को समाप्त करने के उनके स्वप्न को पूरा किया जाए।

महोदय, वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव कामरेड ली दुआन के निधन से वियतनाम के लोगों को ही नहीं अपितु सारे विश्व के श्रमिक वर्ग और लोकतांत्रिक लोगों को हानि हुई है। कामरेड ली दुआन पूरा जीवन भर साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ते रहे, उन्होंने देश में साम्राज्यवाद का

[श्री बसुदेव आचार्य]

विरोध किया और कामरेड हो-ची-मिन के सहयोग से वियतनाम में क्रान्ति सफल हुई और वियतनाम के लोग साम्राज्यवादी ताकतों को खदेड़ सके।

महोदय, मैं श्री चन्द्र शेखर सिंह, श्री ए० वेरावन सेरुवाई, श्री ओम प्रकाश त्यागी, डा० के० एल० राव, श्री जोगिन्दर सेन, श्री नन्द किशोर दास, श्री सी० एच० भाभा और श्री लक्ष्मी नारायण भंजदेव के निधन पर भी संवेदना प्रकट करता हूं। महोदय, आपके माध्यम से मैं अपने दल, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की ओर से शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं।

प्रो० मधु दन्डवते (राजापुर) : अध्यक्ष महोदय, बाबूजी के निधन से एक-एक करके स्वतंत्रता संघर्ष के सेनानी इस देश से उठ रहे हैं और हमें यह दुःख बर्दाश्त करना पड़ रहा है कि आजादी से पहले हमें जोड़ने वाली कड़ियां समाप्त हो रही हैं।

महोदय, मुझे 15 वर्षों तक बाबूजी के काम-काज को देखने का अवसर मिला। संसद में उनका काम करने का तरीका, उनकी प्रशासनिक कुशलता, दूरदृष्टि और सबसे बढ़कर देश में सामाजिक तौर पर उत्पीड़ित लोगों के प्रति उनका स्नेह आदि और ऐसी बातें हैं जो सराहनीय हैं। जिन सदस्यों ने वर्षों तक इस सभा में बाबूजी को सुना। उन्होंने देखा होगा कि सभा में बोलते वक्त बाबूजी कभी भी एक शब्द ज्याद या कम नहीं बोलते थे, कभी फालतू बात नहीं कहते थे। उनकी आलोचना बड़ी संक्षिप्त और तीखी होती थी। एक बार वाद-विवाद में भाग लेते हुए मैंने कहा था कि बाबूजी अपनी बात वैज्ञानिक की तरह स्पष्टता से और कलाकार की भांति सूक्ष्म दृष्टि से कहते थे। सभा के दोनों पक्षों के लोग उनकी बात बड़े ध्यान से सुनते थे क्योंकि वह समझते थे वह कुछ ऐसी बातें कहते हैं जो कोई दूसरा नहीं कहता।

उनकी प्रशासनिक कुशलता सराहनीय थी। आप मुझे इस सभा में अपना निजी अनुभव व्यक्त करने की अनुमति दीजिए। जब पहली बार मैं मंत्री बना तो मैंने बाबूजी से पूछा कि प्रत्येक मन्त्री को किस मूल सिद्धांत का पालन करना चाहिए ? उन्होंने कहा था कि "अफसरशाही, एक कुशल अधिकारी तथा मन्त्री महोदय के बीच जो संबंध होना चाहिए, उसका समुचित ज्ञान होना चाहिए।" "उन्होंने कहा आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि एक कुशल अधिकारी आपकी सहायता करने तथा आपका मार्गदर्शन करने के लिए है वह आप पर शासन करने के लिए नहीं है और जिस क्षण भी आप इस बात को भूल जायेंगे सरकार में आपका अस्तित्व एक कठपुतली की तरह हो जायगा और अफसरशाही आप पर हावी रहेगा। अतः इस बात का ध्यान रखें कि ऐसी बात न होने पाये।" मेरे विचार से यही मूल समस्या थी।

जब मुझे बाबूजी की याद आती है, तब मुझे एक छोटी सी पुस्तक की याद आती है, जिसे इंग्लैंड के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री अटली ने लिखा था। श्री अटली ने कहा था कि—"जब कभी कोई मन्त्री अपने मन्त्रालय का प्रभार संभालता है तब उस विभाग के अफसर चौबीस घंटे के अन्दर यह

निर्णय कर लेते हैं कि मन्त्री के प्रति उनका रवैया कैसा होगा और यदि उसे यह पता चल जाता है कि मन्त्री महोदय को हर प्रारूप पर एक रबर की मुहर की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है तो वह मन्त्री बर्बाद हो जाता है किन्तु यदि वह अपने मस्तिष्क से काम लेता है तो वह पूरे विभाग का मार्गदर्शन कर सकता है।" श्री अटली ने यह कहा था।

बाबू जगजीवन राम के कार्य करने के ढंग में श्री अटली द्वारा दिया गया यह विशेष संदेश साकार हुआ। वह प्रखर बुद्धि वाले थे। समाज से उत्पीड़ित वर्ग के लोगों के प्रति उनके हृदय में अपार प्रेम था। अनेक अवसरों पर बाबूजी ने अपने यह उद्‌गार प्रकट किये थे। यदि वह किसी एक नेता के संदेश से सम्मोहित थे तो वह थे श्री अब्राहम लिंकन। सामाजिक अन्धविश्वास की आलोचना करते समय बाबूजी अब्राहम लिंकन को उद्धरित किया करते थे और कहते थे कि "हमारा मालिक होना आपके हित में हो सकता है किन्तु आपका दास बनना हमारे हित में कैसे हो सकता है।" यह संदेश बाबूजी को जीवन पर्यन्त प्रेरणा देता रहा।

हर व्यक्ति का यह विचार रहा है कि वह एक राष्ट्रीय नेता थे। किन्तु हमारे जीवन की यह त्रासदी रही है कि किसी विशेष जाति और सम्प्रदाय अथवा विशेष वर्ग में उत्पन्न होने वाले राष्ट्रीय नेता भी इस बात को भूल जाते हैं कि वह एक राष्ट्रीय नेता हैं।

इसी सभा में घटी एक बहुत करुणाजनक घटना की ओर इस सभा का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। पिपरा के हरिजनों के साथ की गई निरंकुशता पर मैंने वाद-विवाद आरम्भ किया था। बाबू जी ने इस चर्चा में भाग लिया था। इस सभा में अपने हृदय का क्रोध और क्षोभ प्रकट करते हुए उन्होंने अपने जीवन में घटी एक घटना का उदाहरण दिया था। उन्होंने कहा था—"वे मुझे राष्ट्रीय नेता कहते हैं तथा वे मुझे राष्ट्र को जोड़ने वाला कहते हैं किन्तु जब मैं अपने पुराने प्रिय साथी श्री सम्पूर्णानन्द की मूर्ति का अनावरण करने वाराणसी गया था और जब मैं वहां से लौट आया तब तथाकथित पवित्र ब्राह्मणों ने सम्पूर्णानन्द की मूर्ति पर पवित्र गंगाजल छिड़का था क्योंकि मैं एक अस्पर्श व्यक्ति था और उस मूर्ति की पवित्रता और सम्मान संभवतः नष्ट हो गया होगा और उस मूर्ति को पवित्र करने के लिए उन्होंने उस पर गंगाजल छिड़का था।" एक पुराना अनुभवी व्यक्ति, जिसका मैं नाम नहीं लेना चाहता हूं उठा और बोला—"बाबूजी आपकी नाराजगी और आपके दुःख के समान ही मेरी भी नाराजगी और दुःख है" और हिन्दी में उसने कहा—

[हिन्दी]

"मैं आपके पैर छूने को तैयार हूं।"

[अनुवाद]

सर्वाधिक तीक्ष्ण प्रत्युत्तर में उसने कहा—

[हिन्दी]

"मेरे पैर इतने सस्ते नहीं होते।"

[श्री वसु देव आचार्य]

[अनुवाद]

उसकी टिप्पणी से जनता को शर्म महसूस हुई। यह उस दु:खी हृदय की आवाज है जिसे कुछ चीजों से कष्ट पहुंचा था।

राजवंशीय शासन के बारे में वह एक मजेदार व्याख्या दिया करते थे। उन्होंने कहा था कि "आप तथाकथित राजवंशीय शासन की बात क्यों करते हैं। राजवंशीय शासन की परेशानियां हमें झेलनी पड़ी हैं।" उन्होंने आगे और भी कहा था—"किसी विशेष जाति में पैदा होने वाले व्यक्ति को चुपचाप सहन करना पड़ता है क्योंकि वे उस विशेष जाति में पैदा हुए हैं।" मैं इसी को राजवंशीय शासन कहता हूं और इसे नष्ट करने की किसी को चिंता नहीं है।" उनके मन की यह वेदना थी। इस प्रकार की बातें उन्होंने अनेक अवसरों पर कही थीं।

बहुत कम लोगों को इस बात का अहसास होगा कि बंगला देश युद्ध के दौरान, युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए जो रणनीति तैयार की गई थी और जिस प्रकार रक्षा राजनीति योजना बनाई गई थी उसका अधिकांश श्रेय बाबूजी को जाता है।

बाबूजी अब हमारे साथ नहीं हैं। मेरे विचार से अब यह कह सकते हैं कि उनका जीवन अप्राप्य अवसरों और छिन्न-भिन्न स्वप्नों का जीवन था। वह प्रधान मन्त्री बनते-बनते रह गये। अपना बहुमत सिद्ध करने के लिए जब वह लगभग तैयार ही थे कि संसद भंग कर दी गई और उनका स्वप्न चकनाचूर हो गया। इसलिए मैं कहता हूं कि आशायें उनके साथ आंखमिचौनी का खेल खेलती रहीं और उनका जीवन विलुप्त अवसरों का और छिन्न-भिन्न स्वप्नों का जीवन रहा। आज भी, जब वह हमारे बीच नहीं हैं, मैं यही कहूंगा कि प्रकृति का यह शास्वत नियम है कि भौतिक जीवन नष्ट हो जाता है किन्तु स्वप्न सदा जीवित रहते हैं। आज जबकि बाबूजी जीवित नहीं हैं, मुझे विश्वास है कि जिस कल्पना के साथ वह जीवित रहे तथा जिसके साथ उन्होंने अन्तिम सांस ली, वह कल्पना सदा जीवित रहेगी और उस पावन कल्पना को जब हम साकार कर पायेंगे तभी हम राष्ट्रीय अखण्डता का निर्माण कर सकेंगे।

महोदय, मैं आपके साथ अन्य माननीय साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। श्री चंद्रशेखर सिंह से, उनकी मृत्यु से तीन दिन पूर्व ही, मुझे उनसे भेंट करने का अवसर मिला था। श्री चंद्रशेखर सिंह से मिलने के बाद मैंने अपने दल के अध्यक्ष को बताया था कि उनमें जीवित रहने की अभिलाषा शेष नहीं रही है। वह एक ज्ञानी पुरुष थे। वह इस बात को जानते थे जिगर कैंसर से पीड़ित रोगी की अन्तिम चरण में क्या स्थिति होती है। उन्हें पता था कि वह मृत्यु के कगार पर हैं। उनमें जीने की चाह नहीं रही थी और जीने की चाह न रहने से ही उनकी मृत्यु हुई।

मैं उन सभी अन्य मित्रों के प्रति जिनका आप उल्लेख कर चुके हैं, अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अन्त में मैं वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव का उल्लेख करना चाहूंगा। वियतनाम, एक राष्ट्र के रूप में, आजादी का एक प्रतीक है और उसने यह सिद्ध कर दिया है कि स्वतंत्र होने की इच्छा परमाणु बम से अधिक शक्तिशाली है। वियतनाम से हमें यह पाठ मिला है। वह एक ऐसे दल और आंदोलन का प्रतिनिधित्व करते थे, जो इस संदेश का प्रतीक है। मुझे विश्वास है कि उनकी मृत्यु के पश्चात् भी उनका यह संदेश अमर रहेगा। इस परमाणु युग में उनकी स्मृति शक्ति और जीवन शक्ति प्रदान करती रहेगी।

मैं सभी दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपके माध्यम से शोक संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री पी० कुलन्दईवेलू (गोबिचेट्टिपालयम) : महोदय, राष्ट्र ने एक महान राजनीतिक और पददलितों का रक्षक खो दिया है। उनका व्यक्तित्व आत्म विश्वास से पूर्ण, संतुलित और स्पष्ट दृष्टिकोण से परिपूर्ण था। व्यावहारिक जीवन का उन्हें पूर्ण ज्ञान था। उनमें अदम्य साहस था। उनका स्वभाव मधुर और मिलनसार था किन्तु साथ ही वह उद्देश्य के प्रति दृढ़निश्चयी थे।

बाबू जी के तमिलनाडु के साथ सदा ही बहुत अच्छे संबंध रहे। उनका नाम पददलितों के साथ जुड़ा हुआ है। अपने सार्वजनिक जीवन के आरम्भ में ही महात्मा गांधी और डा० राजेन्द्र प्रसाद से प्रभावित होकर बाबूजी में सरलता और सेवा के प्रति निष्ठावान होने का महान गुण आ गया था। उन्होंने सभी सामाजिक बुराइयों का मुकाबला किया। उनके निधन से प्रगतिशील ताकतों ने एक महान समर्थक खो दिया है। महोदय, मैं अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं।

जहां तक श्री चन्द्रशेखर सिंह का संबंध है। श्री चन्द्रशेखर सिंह अनेक वर्षों तक एक पत्रकार रहे और केन्द्रीय मंत्रिमंडल में शामिल होने के बाद भी उन्होंने पत्रकारिता से अपना संबंध बनाये रखा। वह एक सक्रिय श्रमिक नेता थे और उन्होंने बीड़ी कर्मकारों का संगठन खड़ा करने में पर्याप्त समय लगाया। उन्होंने ईमानदारी तथा निष्ठा के साथ देश की सेवा की तथा अपने साथियों का और जनता का सम्मान प्राप्त किया। हम श्री चन्द्रशेखर सिंह तथा अन्य दिवंगत सदस्यों के परिवारों को संवेदनायें भेजते हैं।

श्री बलवंत सिंह रामूवालिया (संगरूर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, अपने दल की ओर से मैं बाबू जगजीवन राम तथा अन्य व्यक्तियों के दुःखद निधन के संबंध में, माननीय प्रधान मन्त्री तथा अन्य सदस्यों द्वारा अभिव्यक्त विचारों के साथ-साथ अपनी संवेदना अभिव्यक्त करता हूं। बाबू जगजीवन राम भारत के एक महान सपूत और नेता थे। वह कमजोर वर्ग और पददलितों के अधिकारों तथा उनके आत्म सम्मान के एक महान रक्षक थे। बाबूजी न केवल एक मानव थे बल्कि वह एक संस्था थे। उन्होंने संकट के दौरान देश की सेवा की तथा अपने आप को एक सफल प्रशासक और एक सच्चा सपूत सिद्ध किया।

मैं भी दिवंगत आत्मा के प्रति अत्यधिक आदर और श्रद्धा अभिव्यक्त करता हूं।

[श्री बलन्त सिंह रामूवालिया]

मैं श्री चन्द्रशेखर सिंह के निधन पर भी गहरा शोक व्यक्त करता हूं जिन्हें मृत्यु के निर्दयी हाथों ने हमसे छीन लिया है।

मैं श्री सेरूदई, श्री ओम प्रकाश त्यागी, डा० के० एल० राव, श्री जोगेन्द्र सेन, श्री नंद किशोर दास, श्री सी० एच० भाभा और श्री लक्ष्मी नारायण भंजदेव को भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

मैं वियतनाम के महान नेता श्री ली दुआन को भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

ईश्वर उन्हें स्वर्ग में शांति और सम्मान प्रदान करे तथा हमें इन महान नेताओं के महान कार्यों का अनुगमन करने की प्रेरणा दे।

श्री अताउर्रहमान (बारापेट) : अध्यक्ष महोदय, मैं असमगण परिषद् की ओर से श्री जगजीवन राम के निधन पर इस सभा द्वारा अभिव्यक्त की गई भावनाओं से सहमत हूं। हमें यह तो पता चल चुका था कि वह मृत्यु से जूझ रहे हैं और वह परलौकिक जीवन की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। समाचार से तो उनके निधन की पुष्टि भर हुई है। उनका निधन वास्तव में देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। विशेष रूप में उन लोगों के लिए जो उनके काफी नजदीक थे — मेरा मतलब है उनकी जाति के लाखों पद-दलित लोगों से। उनकी शुरूआत बहुत ही छोटे स्तर से बिहार में हुई तथा वह ऊंचाई के इतने अधिक शिखर पर पहुंचे। जब वह अध्ययन के लिए कलकत्ता गये तो लोगों ने उनकी योग्यता की तारीफ की। उन दिनों पूर्वी क्षेत्र के सभी लोग उच्च अध्ययन के लिए कलकत्ता जाते थे। बंगाल के तत्कालीन नेताओं ने उनकी खोज की और उनके बारे में कहा कि "भारत को बचाने विशेष रूप में पददलित व्यक्तियों की रक्षा करने के लिए यह व्यक्ति पैदा हुआ है।" उसके पश्चात वह वापस आये तथा उन्होंने राजनीति में छलांग लगा दी तथा उसमें वह इतनी ऊंचाई पर पहुंच गये कि लोगों को संदेह हुआ। इस पर मुझे इकबाल की महान कविता याद आती है—

[हिन्दी]

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले,
खुदा बन्दे से पूछे बता तेरी रजा क्या है।

[अनुवाद]

जब वह इतने बड़े व्यक्ति बन गये तो उनके साथियों एवं सहयोगियों को संदेह हुआ कि आखिर वह हैं क्या चीज। उनके बारे में जो कुछ कहा जाये वह कम है। लेकिन सिर्फ शब्दों से ही उनको याद नहीं किया जाएगा, बल्कि उन्होंने जो कार्य किये हैं, जिसके लिए वह लड़े हैं उन्हें हमेशा याद रखा जायेगा।

सच तो यह है कि वह सिर्फ राष्ट्रीय नेता ही नहीं थे, अपितु पद-दलितों के लिए वह राष्ट्रीय रक्षक थे। उन्होंने सिर्फ इस बात में ही दिलचस्पी नहीं ली कि उनके आस-पास क्या हो रहा है अपितु

प्रशासन के सभी पहलुओं में उनकी दिलचस्पी थी। मुझसे पूर्व के कुछ वक्ताओं ने यह भी कहा है कि वह बड़े सूक्ष्मदृष्टा थे। प्रो० मधु दण्डवते ने बंगला देश युद्ध में उनके योगदान की बात कही। मैंने उन्हें अपने जीवन में बहुत ही थोड़े समय के लिए देखा जब उन्होंने हमारे क्षेत्र का दौरा किया। उन दिनों में मंत्री सड़क मार्ग से ही दौरा किया करते थे। मैं जिले से शहर के मुख्यालय तक उनके साथ रहा तथा रास्ते में हम लोग चाय बागानों से गुजरे। उन्होंने पूछा "ये छोटी-छोटी झाड़ियां क्या हैं।" मैंने उन्हें बताया कि ये चाय के खेत हैं। उन्होंने मुझसे पूछा "क्या मैं जाकर इन्हें देख सकता हूं?" वह बिना बताये उन बागानों में चले गये तथा उन्हें देखा। उन्होंने मजदूरों के घरों का भी मुआयना किया तथा उनकी हालत देखकर स्तब्ध रह गये और चाय बागानों के प्रबंधक को फटकारा। अनुसूचित जातियों से संबंधित समस्याओं के बारे में वह इसी तरह दिलचस्पी लिया करते थे।

हमें आज वास्तव में ऐसे ही नेताओं की जरूरत है तथा श्री जगजीवन राम जैसे व्यक्तित्व की आज भारत माता को आवश्यकता है। लेकिन क्या हमें ऐसे नेता फिर मिलेंगे। क्या सभी नेता उन्हीं की तरह बोलने वाले होंगे? हम उनके तथा अन्य नेताओं —श्री चन्द्रशेखर सिंह, श्री ए० बेरावन सेरुवई श्री ओम प्रकाश त्यागी, डा० के० एल० राव, श्री जोगिन्दर सेन, श्री नन्द किशोर दास, श्री एच० सी० भाभा तथा श्री लक्ष्मी नारायण भंजदेव के निधन पर शोक व्यक्त करते हैं।

आपकी अनुमति से मैं असम के भूतपूर्व संसद सदस्य श्री पूरन शर्मा का भी उल्लेख करूंगा जिनकी मृत्यु दो हफ्ते पूर्व हुई है। इन सभी दिवंगत आत्माओं के लिए शांति की कामना करते हैं।

श्रीमती गीता मुखर्जी (पंसकुरा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, अपने दल की ओर से मैं, सदन के नेता तथा विभिन्न अन्य दलों के नेताओं द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं में भागीदार हूं।

वस्तुतः बाबू जगजीवन राम कई प्रकार से बहुत सफल रहे। उनकी सफलता इस बात को सिद्ध करती है कि पद-दलित को अगर अवसर मिले और इच्छाशक्ति हो तो वह दुनिया में आत्म-सम्मान उजागर कर सकता है। उन्होंने अपने उदाहरण से इस बात को साबित कर दिया।

यह बात तो पहले ही कही जा चुकी है कि वह न सिर्फ पद-दलितों के ही नेता थे अपितु राष्ट्रीय नेता भी थे। मैं इस बात से भी पूरी तरह से सहमत हूं।

बाबूजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैं इस बात की प्रतिज्ञा करूंगा कि हमारा देश एक रहे एवं पद-दलितों की मुक्ति के लिए हम संघर्ष जारी रखें। ये दो उनकी बातें हैं जिनके लिए हमें संघर्ष करना पड़ेगा।

मैं अन्य नेताओं को भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्हें सभी लोगों ने समुचित श्रद्धांजलि अर्पित की है।

श्री चन्द्रशेखर सिंह जी के बारे में मैं कहूंगी कि उनसे बात करते वक्त हम यह सोच भी नहीं

[श्रीमती गीता मुखर्जी]

सकते थे कि अन्दर से वह इतने ज्यादा बीमार हैं। उनमें अदम्य साहस था जिसकी हमें सराहना करनी पड़ेगी। मैं उन्हें तथा सदन के भूतपूर्व सदस्यों को श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

अन्त में मैं वियतनाम के नेता स्वर्गीय ली दुआन को श्रद्धांजलि अर्पित करूंगी। वास्तव में महान नेता श्री होची मिन्ह के गुण उनमें भरे हुए थे। उनके साहस, आत्म-सम्मान, सादगी तथा शालीनता से यह प्रतीत होता है कि वह एक बड़े साम्यवादी नेता थे।

मैं व्यक्तिगत रूप में तथा साम्यवादी दल की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करती हूं।

श्री के० पी० उन्नीकृष्णन (बडागरा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेताओं, अन्य माननीय सदस्यों एवं आपके द्वारा जो भावनायें व्यक्त की गई हैं मैं अपने दल की ओर से उनमें भागीदार हूं।

बाबू जगजीवन राम जैसे ऐतिहासिक व्यक्तित्व को इतिहासकारों के सुपुर्द ही करना पड़ेगा, क्योंकि उनके जीवन के ऐसे बहुत से पहलू हैं जिन्हें हम समझ नहीं पाये तथा ऐसे योगदान हैं जिन्हें हमने जाना नहीं है। परन्तु उनके बारे में यह बात तो स्पष्टत: कही जा सकती है कि वह इस शताब्दी के सबसे महान व्यक्ति थे जिन्होंने इस देश में जन्म लिया। वह इस दृष्टि से भी महान थे कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, जिनकी प्रेरणा से वह सार्वजनिक जीवन में आए, तथा जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस तथा सरदार पटेल जैसे देश के अन्य बड़े नेताओं से भी अपने ही ढंग से कई मामलों में उनके विचार भिन्न थे। वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सामाजिक कुरीतियों का साथ नहीं दिया। वह न केवल दलित वर्ग के अधिकारों के लिए लड़े बल्कि उन्होंने उनके अधिकारों की स्वतंत्र भारत की संविधियों और अन्य कानूनों में व्यवस्था कराई। वह इन लोगों के अधिकारो के लिए निरन्तर लड़ते रहे, चाहे वह किसी पद पर रहे या नहीं रहे, अथवा सत्ताधारी दल में रहे हों या विपक्ष में। वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिनके हम हमेशा आभारी रहेंगे। संसद द्वारा बनाये गये अनेक सामाजिक कानूनों का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। वह उन व्यक्तियों में से नहीं थे जिन्हें पद प्राप्त करने के बाद महत्ता मिलती है बल्कि वह उन व्यक्तियों में से थे जो स्वयं पद को महत्ता प्रदान करते हैं। महोदय, हम में से अनेकों को उनके साथ 20 या इससे ज्यादा वर्षों से रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हमने न सिर्फ बुद्धिमान परामर्शदाता को ही खोया है अपितु हम उन्हें राजनीति के भीष्म पितामह भी कह सकते थे। उनके निधन से न सिर्फ दलित वर्ग को ही क्षति हुई है। अपितु पूरे राष्ट्र को अपार क्षति हुई है। सदन को उनकी वाकपटुता की कमी अखरेगी। जब कभी किसी भी अवसर पर उन्होंने बोला उनकी तारीफ ही हुई। यह सदन वरिष्ठतम सदस्य की कमी महसूस करेगा।

महोदय, मैं इस महान नेता को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, आने वाले दिनों में जिनकी कमी हम महसूस करेंगे तथा अन्य साथियों को जो श्रद्धांजलि अर्पित की गई, मैं उनसे सहमत हूं, उनमें

से कुछ व्यक्ति वर्तमान सदन के सदस्य थे और कुछ उससे पहले के तथा अन्य दिवंगत साथियों और वियतनाम के साम्यवादी दल के महासचिव स्वर्गीय श्री ली दुआन के प्रति भी अपनी शोक संवेदना व्यक्त करता हूं जो कि होची मिन के साथी थे।

[हिन्दी]

प्रो० सैफुद्दीन सोज़ (बारामूला) : जनाबे स्पीकर साहब, आज सुबह की डाक में मुझे इस मुअज्जज एवान के उन मैम्बरों की एक लिस्ट मिली, जिनका इन्तकाल हुआ है और सरे-फहरिस्त बाबू जगजीवन राम का नाम है। मेरी नजर में बाबू जगजीवन राम एक जात नहीं थे, बल्कि वह जिन्दगी के सफर में एक अंजुमन बन गए। सातवीं लोक सभा में कुछ देर के लिए देखने का मौका मिला। इस पार्लियामेंट के वे बराबर मैम्बर रहे और आठवीं लोक सभा में भी यहां मुअज्जज रुकन की हैसियत से उन्होंने हल्फ लिया और तब से उनके इन्तकाल तक उनके वजूद का जो अक्स मेरे जहन पर था, वह यह रहा कि वह अपनी जात में अंजुमन थे। मुझे याद है, जब इस एवान में इस दरवाजे से आते थे जब तक वे अपनी नशिस्त पर नहीं बैठ जाते, बिना लिहाज पार्टी के, तब तक तमाम मुअज्जज मैम्बरान की निगाहें उन पर मरकूज होती थीं। वह पार्लियामेंट के इजलास में आकर, वे अक्सर तो आया नहीं करते थे, इसलिए नहीं कि उनकी दिलचस्पी नहीं थी पार्लियामेंट के मुबाहिस में, लेकिन वे खास मवाकह पर तशरीफ लाते थे। सातवीं लोक सभा में मैंने उनकी एक-दो बार तकरीरें सुनी थीं। मुझे याद है, जिस तरह से एक दीवार चुनी जाती है, एक इंट पर दूसरी इंट रखी जाती है, बड़े करीने से दीवार सजाई जाती है, इस पार्लियामेंट का रिकार्ड शाहिद है। बाबू जगजीवन राम को कभी अपनी तकरीर को किसी जगह दुरुस्त करने की नौबत नहीं आई। वे अपनी बात को तोलकर बोलते थे। उनकी हर बात हिन्दुस्तान की एकता और अखंडता की मंजिल और उसके निशान वाजे करते थे। मुझे उनके इंतकाल पर बड़ा दु:ख है।

प्राइम मिनिस्टर ने जिस अकीदत्त का, खिराजे तहसीन का इजहार किया है, मैं अपने दिल की गहराइयों से और दूसरे मुअज्जज मैम्बरान ने उनके बारे में जो इजहारे ख्याल फरमाया, उनकी ताईद करता हूं। अभी जो मैंने अर्ज किया, बाबू जगजीवन राम यहां बहुत कम बोलते थे, वे जब भी यहां बैठते थे, मुझे एक शेर याद आता था। वह शेर है :

"खमोशी मानिएदारद किदर-गुफतन नमी आयद"

उसका तरजुमा उर्दू में यह है :

खमोशी गुफतगू है बेजबानी है जुबां मेरी

इसलिए उनका यहां खाली कुछ लम्हात के लिए बैठना इस मुअगु ऐवान की शान थी और

[श्री सैफुद्दीन सोज]

इस अंजुमन के उठ जाने से मुझको और मेरी पार्टी को और तमाम देश भर के लोगों को बहुत दुःख हुआ है।

इसमें मुझे एक और शकसियत का बड़ा अहसास हुआ उनके इंतकाल से, जिनको मैं जानता था, जनाब चन्द्र शेखर सिंह जी। मैं समझता हूं कि वे जवानी में मरे क्योंकि अब हमारी औसत उम्र बहुत बढ़ गई है। 59 वर्ष की उम्र में उनका इंतकाल करना बड़े दुःख की बात है और मैं उनको एक शरीफुन्नफ्स इन्सान की हैसियत से जानता हूं। उनके दिल में पिछड़ी जातियों के लोगों के लिए बड़ी हमदर्दी थी और बाबू जगजीवन राम जी का जब मैंने नाम लिया, तो मैंने पिछड़ी जातियों का तजकिरा नहीं किया। मुझे ख्याल है कि बाबू जगजीवन राम जी की जात पिछड़ी जातियों के लिए पंचायत की हैसियत रखती थी, अदालत आलियः की हैसियत रखती थी। अदालत में कोई मुकदमा नहीं चलता था, यह अलग बात है लेकिन फर्याद करने के लिए एक मंजिल होती थी। चन्द्र शेखर सिंह को भी मैंने देखा। उनमें हिन्दुस्तान के गरीब लोगों के लिए बड़ी तड़प थी और उनके इंतकाल से मुझे जाती तौर पर बड़ा सदमा पहुंचा है। जहां तक दूसरे मुअज्जज मेम्बरान का ताल्लुक है, उनके खानदान के गम में हम शरीक रहेंगे।

پروفیسر سیف الدین سوز۔

جناب اسپیکر صاحب آج صبح کی ڈاک میں مجھے اس معزز ایوان کے دو معزز ممبروں کی ایک لسٹ ملی جن کا انتقال ہوا ہے اور سر فہرست بابو جگ جیون رام کا نام ہے۔ میری نظر میں بابو جگجیون رام ایک ذات نہیں تھے بلکہ وہ زندگی کے سفر میں ایک انجمن بن گئے۔ ساتویں لوک سبھا میں کچھ دیر کے لئے دیکھنے کا موقع ملا۔ اس پارلیمنٹ کے وہ برابر ممبر رہے اور آٹھویں لوک سبھا میں بھی یہاں معزز رکن کی حیثیت سے انہوں نے حلف لیا اور تب سے ان کے انتقال تک ان کے وجود کا جو عکس میرے ذہن پر تھا وہ یہ رہا کہ وہ ایک اپنی ذات کے انجمن تھے۔ مجھے یاد ہے جب اس ایوان سے وہ گزرتے تھے اس دروازے سے آتے ہی جب تک وہ اپنی نشست پر نہیں بیٹھ جاتے بلالحاظ پارٹی کے تب تک تمام معزز ممبران کی نگاہیں ان پر مرکوز ہوتی تھیں۔ وہ پارلیمنٹ کے اجلاس میں آکر وہ اکثر تو آیا نہیں کرتے تھے۔ اس لئے نہیں کہ ان کی دلچسپی نہیں تھی پارلیمنٹ کے مباحث میں لیکن وہ خاص موقع پر تشریف لائے تھے۔ ساتویں لوک سبھا میں میں نے ان کی ایک دو بار تقریریں سنی تھیں۔ مجھے یاد ہے جس طرح سے ایک دیوار چنی جاتی ہے بڑے قرینے سے دیوار سجائی جاتی ہے اس پارلیمنٹ کا ریکارڈ شاہد ہے بابو جگجیون رام کو کبھی اپنی تقریر کو کسی جگہ درست کرنے کی نوبت نہیں آئی۔ وہ اپنی بات کو تول کر بولتے تھے۔ ان کی ہر بات ہندوستان کی ایکتا اور اکھنڈتا کی منزل اور اس کے نشان واضح کرتے تھے۔ مجھے ان کے انتقال پر بڑا دکھ ہے۔

پرائم منسٹر نے جس عقیدت کا جس خراج تحسین کا اظہار کیا ہے میں اپنے دل کی گہرائیوں سے اور دوسرے معزز ممبران نے ان کے بارے میں جو اظہار خیال فرمایا ان کی تائید کرتا ہوں۔ ابھی جو میں نے عرض کیا بابو جگجیون رام یہاں بہت کم بولتے تھے وہ جب بھی یہاں بیٹھتے تھے مجھے ایک شعر یاد آتا تھا۔ وہ شعر ہے۔

"خاموشی معنی دارد کہ در گفتن نمی آئید"

اس کا ترجمہ اردو میں یہ ہے خموشی گفتگو ہے بے زبانی ہے زباں میری۔ اس لئے ان کا یہاں خالی کچھ

لمحات کے لئے بیٹھنا اس معزز ایوان کی شان تھی اور اس انجمن کے اٹھ جانے سے مجھ کو اور میری پارٹی کو اور تمام دیش بھر کے لوگوں کو بہت دکھ ہوا ہے۔

اس بیچ مجھے ایک اور شخصیت کا بڑا احساس ہوا ان کے انتقال سے جن کو میں جانتا تھا۔ جناب چندر شیکھر سنگھ جی۔ میں سمجھتا ہوں کہ وہ جوانی میں مرے کیونکہ اب ہماری اوسط عمر بہت بڑھ گئی ہے۔ ۵۹ ورش کی عمر میں ان کا انتقال کرنا بڑے دکھ کی بات ہے اور میں ان کو ایک شریف النفس انسان کی حیثیت سے جانتا ہوں اُن کے دل میں پچھڑی ذات کے لوگوں کے لئے بڑی ہمدردی تھی اور بابو جگجیون رام جی کا جب میں نے نام لیا تو میں نے پچھڑی ذاتیوں کا تذکرہ نہیں کیا۔ مجھے خیال ہے کہ بابو جگجیون رام جی کی ذات پچھڑے ذاتیوں کے لئے پنچایت کی حیثیت رکھتی تھی۔ عدالتِ عالیہ کی حیثیت رکھتی تھی عدالت میں کوئی مقدمہ نہیں چلتا تھا یہ الگ بات ہے لیکن فریاد کرنے کے لئے ایک منزل ہوتی تھی۔ چندر شیکھر سنگھ جی کو بھی میں نے دیکھا۔ ان میں ہندوستان کے غریب لوگوں کے لئے بڑی تڑپ تھی اور ان کے انتقال سے مجھے ذاتی طور پر بڑا صدمہ پہنچا ہے۔ جہاں تک دوسرے معزز ممبران کا تعلق ہے ان کے خاندان میں ہم شریک رہیں گے۔)

[अनुवाद]

श्री पीयूष तिरकी (अलीपुरद्वार) : मैं दिवंगत गणमान्य व्यक्तियों को श्रद्धांजलि देने के लिए सभा के साथ शामिल हूं। विभिन्न विपक्षी दलों ने दिवंगत आत्माओं को अपनी सच्ची श्रद्धांजलि दी है।

श्री जगजीवन राम को प्यार से "बाबू" कहते थे। "बाबू" का अर्थ है पिता। वास्तव में उन्हें बाबू कहना चाहिए, और उनका नाम "बाबू" ही रहना चाहिए। यह भारतीय जनता द्वारा उनके प्रति आदर भाव है।

भारत ने अपना एक विख्यात तथा सर्वाधिक सच्चा सपूत खो दिया है। गरीब लोगों तथा पद-दलितों ने अपना एक सच्चा मित्र तथा मार्गदर्शक खो दिया है। उनका देश तथा इसके लोगों के प्रति प्यार अद्वितीय था। वह एक राजनेता थे। वह भारत के सामाजिक रूप से तथा आर्थिक तौर पर पिछड़े हुए लोगों के लिए आशा और प्रकाश थे। अतः सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए लोग अब अंधेरे में हैं। वह नहीं जानते हैं कि उन्हें क्या करना है और वह अपनी व्यथा किस को सुनाएं, और कौन उनका पथ-प्रदर्शन करेगा, क्योंकि भारतीय राजनीति अभी भी जातिवाद पर आधारित है। वह इस जातिवाद तथा जातिवाद और साम्प्रदायिक विचारधारा पर आधारित राजनीति के विरुद्ध थे।

भारत का यह सच्चा सपूत अब हमारे बीच नहीं है। मैं इस दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धांजलि व्यक्त करता हूं और आप से अनुरोध करता हूं कि जो संवेदना मैं अपने तथा अपने दल की ओर से व्यक्त करता हूं इसे शोक संतप्त परिवार तक पहुंचा दिया जाए।

एक बात और; दो गणमान्य व्यक्ति बिहार के हैं। अतः बिहार अब अंधेरे में और नेता विहीन है। बिहार जगजीवन राम जैसे राष्ट्रीय नेता और साथ ही चन्द्र शेखर सिंह बाबू जैसे नेता जो अब नहीं रहे उत्पन्न कर सका है। अतः बिहारी जनता बहुत संतप्त और दुःखी है। अतः मैं बिहारी जनता के दुःख में उनके साथ हूं। मैं पुनः एक बार आप से निवेदन करता हूं कि मेरी श्रद्धांजलि संतप्त परिवारों तक पहुंचा दी जाए।

[हिन्दी]

श्री मोहम्मद महफूज अली खां (एटा) : जनाब स्पीकर साहब, आज बहुत से लोगों ने हमारे उन मोअज्जिज मेम्बरान के लिए और बाबू जगजीवन राम जी के लिए जो हमारे दरम्यान नहीं रहे, खिराजे अकीदत का इजहार किया।

इसमें कोई शक नहीं कि बाबू जगजीवन राम की एक हैसियत और एक मुकाम था। आजादी की लड़ाई में जो वे खिदमत कर सकते थे वह उन्होंने की। इसमें कोई दो राय नहीं कि उन्होंने शेड्यूल्ड कास्ट्स और बेकवर्ड क्लास की बहुत खिदमत की। हमें इस सब का एहसास है।

[श्री मोहम्मद महफूज अली खां]

आज वे हमारे दरम्यान नहीं रहे। मैंने पिछले सेसन में बाबू जी को गैलरी में कांपते हुए हाथों खड़े देखा। मैं उनके पास पहुंचा। उनका हाथ पकड़ कर मैं उनको वहां से यहां लेकर आया।

इसमें कोई शक नहीं कि बाबू जी का एक मुकाम था और इसके सिलसिले में बहुत कुछ कहा जा चुका है। प्राइम मिनिस्टर साहेब ने और दूसरे मेम्बरान ने उनकी क्वालिटीज को बयान किया। मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से इजहारे अकीदत पेश करता हूं।

चन्द्र शेखर सिंह साहेब और दूसरे लोगों के लिए भी मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से इन्हीं जजबात को पेश करता हूं।

[अनुवाद]

डा० ए० के० पटेल (मेहसाना) : अध्यक्ष महोदय, अपने दल की ओर से, मैं जगजीवन जी तथा अन्य सदस्यों को श्रद्धांजलि देने के लिए खड़ा हुआ हूं जिनकी हाल ही में मृत्यु हुई है। जगजीवन जी केवल एक विशेष वर्ग के नेता ही नहीं अपितु, वह एक राष्ट्रीय नेता थे। वह बिहार के एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे, और प्रतिकूल वातावरण और स्थिति के बावजूद वह अपने व्यक्तित्व के कारण ऊपर उठे। उन्होंने बिहार में शिक्षा पाई। वह भारत की स्वतन्त्रता के उद्देश्य के लिए लड़े। वह गांधी जी तथा मालवीय जी से प्रभावित हुए थे। उन्हें शिक्षा के लिए बनारस विश्वविद्यालय में बुलाया गया। तत्पश्चात् उन्होंने अपनी शिक्षा कलकत्ता में पूरी की; और सरकारी नौकरी में जाने के बदले जो उनके परिवार के सदस्य उनके लिए चाहते थे वह राष्ट्रीय उद्देश्य में सम्मिलित हुए; वह 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के लिए लड़े और अनेक बार जेल भेजे गए। वह 50 वर्ष की अवधि के लिए सक्रिय राजनीति में शामिल थे।

जगजीवन जी को सच्ची श्रद्धांजलि इस देश से हरिजनों पर अत्याचार तथा अस्पृश्यता को समाप्त करना होगा जो अभी भी विद्यमान है जिसके बारे में सभी जानते हैं।

मैं श्री चन्द्र शेखर सिंह तथा अन्य सदस्यों को भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिनकी हाल ही में मृत्यु हुई।

श्री इब्राहीम सुलेमान सेट (मंजेरी) : अध्यक्ष महोदय, मैं बाबू जगजीवन राम तथा इस पुनीत सदन के अन्य विख्यात भूतपूर्व मंत्री और सदस्यों के दुखद निधन पर आपके, प्रधान मंत्री तथा अन्य नेताओं का साथ देने के लिए खड़ा हुआ हूं।

जहां तक बाबू जी का सम्बन्ध है वह भारत का एक लब्ध प्रतिष्ठ सपूत पुत्र था और उनके निधन से एक युग का अन्त हुआ। अभी-अभी प्रधान मन्त्री जी ने ठीक ही कहा कि वे केवल एक स्वतन्त्रता सेनानी ही नहीं थे अपितु आधुनिक भारत के निर्माता भी थे। वास्तव में बाबू जगजीवन राम का यही स्थान है। वह इस देश के राजनीतिक क्षितिज पर एक दीप्तिमान तारा था, और उन्होंने

अर्द्ध-शताब्दी तक प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया, विशेषकर राजनीति तथा सामाजिक क्षेत्र को। ऐसे व्यक्तित्व वाले लोग सदैव जन्म नहीं लेते हैं; वे एक शताब्दी में केवल एक बार ही जन्म लेते हैं। महाकवि इकबाल ने कहा :

[हिन्दी]

हजारों साल नर्गिस अपनी बे-नूरी पै रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।।

[अनुवाद]

ऐसा व्यक्तित्व बाबू जगजीवन राम जी का था। वस्तुतः यह समूचे राष्ट्र के लिए एक ऐसी क्षति है जिसको पूरा नहीं किया जा सकता है।

जहां तक इस पुनीत सदन के अन्य भूतपूर्व मंत्री और सदस्यों का सम्बन्ध है, मुझे उनके निधन पर दुःख हो रहा है और मैं कहता हूं कि उनके दुखद निधन से भारत गरीब हो गया है।

इन शब्दों के साथ मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि बाबू जगजीवन राम जी, चन्द्र शेखर सिंह जी, डा० के० एल० राव तथा इस आदरणीय सदन के अन्य माननीय सदस्यों के शोक-संतप्त परिवारों के प्रति हमारी सहानुभूति प्रकट करें।

श्री एन० वी० एन० सोमू (मद्रास उत्तर) : अध्यक्ष महोदय, जो भावनाएं यहां व्यक्त की गई मैं 'डी०एम०के०' पार्टी की ओर से उन भावनाओं से सम्बद्ध करता हूं। महोदय, श्री जगजीवन राम ने स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में राष्ट्र की जो सेवा की वह अत्यन्त उल्लेखनीय है। वह भारतीय संसद-विज्ञों में वरिष्ठ राजनयिक थे। वे न केवल एक स्वतंत्रता सेनानी ही थे, अपितु ऐसे व्यक्तियों के अग्रदूत भी थे जिन्होंने हरिजनों को जातीय अन्ध-विश्वासियों के चंगुल से मुक्त कराया। जैसा आपने कहा वे 23 वर्ष तक मंत्री रहे थे और कुछ समय के लिए उप प्रधान मन्त्री रहे। वह प्रधान मन्त्री भी बन जाते, किंतु उन्हें अवसर नहीं मिला। भारत को और अधिक सम्मान प्राप्त होता यदि हरिजनों का नेता भारत के प्रधान मन्त्री के गरिमा-पूर्ण पद को सुशोभित करता। डा० अम्बेडकर ने हरिजनों को राजनीतिक जागरूकता प्रदान की। बाबू जगजीवन राम ने उन्हें सामाजिक प्रगति प्रदान की। वे दोनों बहुत महान नेता हैं, किंतु वे अब नहीं रहे। अब हरिजन एक महान नेता से वंचित हो गये।

मैं अपने द्रविड़ मुनेत्र कजगम दल की ओर से देश के लाखों करोड़ों दलित वर्गों के लोगों तथा बाबू जगजीवन राम के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करता हूं।

मेरी संवेदना तथा सहानुभूति सर्वश्री चन्द्र शेखर सिंह, ए० वैरावन सेरुवई, ओम प्रकाश त्यागी,

[श्री एन० वी० एन० सोमू]

डा० के० एल० राव, जोगिन्दर सेन, नन्द किशोर दास, सी० एच० भाभा और लक्ष्मी नारायण भंज देव के परिवारों के प्रति भी हैं। मैं वियतनाम कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव के प्रति भी संवेदना प्रकट करता हूं।

श्रीमती डी० के० भंडारी (सिक्किम) : अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय प्रधान मंत्री तथा माननीय सदस्यों द्वारा श्री जगजीवन राम की स्मृति के प्रति जिन्हें इस देश के जिन्हें लोग प्यार से 'बाबूजी' कहते थे व्यक्त की गई भावनाओं तथा विचारों में सम्मिलित हूं। भारत का यह महान सपूत जो अब नहीं रहा के गुणों का वर्णन करने के लिए शब्द अपर्याप्त हैं। वह दलितों के समर्थक थे और जाति, वर्ग अथवा धर्म को छोड़कर सभी दलितों के रक्षक थे। इसी गुण से वह इस देश की जनता के प्रिय हो गए थे। इस संकटकालीन परिस्थिति में इस प्रभावशाली राजनीतिक व्यक्ति की मृत्यु वस्तुत: देश के लिए एक भारी तथा अपूर्णीय क्षति है।

मैं, अपनी पार्टी 'सिक्किम संग्राम परिषद' की ओर से देश को इस महान आत्मा को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं और शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करती हूं।

मैं श्री चन्द्र शेखर सिंह तथा अन्य माननीय सदस्यों के दुखद निधन पर संवेदना व्यक्त करती हूं और उनके प्रति आदरपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं और ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि वह उनके परिवार के सदस्यों को इस क्षति को सहन करने की शक्ति दे।

[हिन्दी]

श्री सुल्तान सलाउद्दीन ओवेसी (हैदराबाद) : जनाब स्पीकर सर, इस ऐवान में ताजीयती करारदाद पेश की गई है, मैं उसकी भरपूर ताईद करता हूं। जगजीवनराम साहब हिन्दुस्तान के एक बड़े लीडर थे और वे हरिजनों की उम्मीद का मरकज बन गए थे। प्राइम-मिनिस्टर और ऐवान के दीगर लोगों ने जिन खयालात का इजहार किया और अपोजीशन लीडर श्री सी० माधव रेड्डी साहब ने भी अपने खयालात का इजहार किया है कि अगर वे हिन्दुस्तान के प्राइम-मिनिस्टर बन जाते तो हिन्दुस्तान की तारीख दूसरी होती। मैं यह कहूंगा कि आन्ध्रा से अगर अब इप्तदा की जाए तो हम एक नयी तारीख बनाना शुरू कर देंगे और एक अच्छा ख्याल होगा। इसी तरीके से एवान के जिन-जिन लोगों ने ख्यालात का इजहार किया, मैं उसकी ताईद करूंगा और चन्द्र शेखर सिंह साहब और दीगर हजरात जो आज हममें मौजूद नहीं हैं, उन सबके साथ हम इजहारे हमदर्दी करते हैं और उनके पसमान्दगान के लिए दुआ करते हैं कि अल्लाह उनको सबरे जमील अता फरमाए।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : जैसा पूरे सदन ने व्यक्त किया है, हम इन मित्रों की क्षति पर शोक मनाते हैं तथा हम अपनी संवेदनायें शोक संतप्त परिवारों तक पहुंचा देंगे।

अब सभा शोक प्रकट करने के लिए थोड़ी देर के लिए मौन खड़ी हो।

12.11 म० प०

तत्पश्चात् सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े रहे।

अध्यक्ष महोदय : अब सभा दिवंगत सदस्यों के प्रति आदर के लिए कल 18 जुलाई, 1986 को 11 म० पू० पर पुनः समवेत होने तक के लिए स्थगित होती है।

12.12 म० प०

तत्पश्चात् लोक सभा शुक्रवार, 18 जुलाई, 1986/27 आषाढ़, 1908 (शक) के ग्यारह बजे म० पू० तक के लिए स्थगित हुई।

मुद्रक : विन्ध्यवासिनी पैकेजिंग्स, सीलमपुर, दिल्ली-53

लोक सभा वाद-विवाद
का
हिन्दी संस्करण

गुरुवार, 17 जुलाई, 1986 । 26 आषाढ़, 1908 (शक)
का

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ (iii), पंक्ति 17, 'एन्टती' के स्थान पर 'एन्टनी' पढ़िये ।

पृष्ठ (iii), पंक्ति 19, 'एंगनी' के स्थान पर 'एंगती' पढ़िये ।

पृष्ठ (iii), पंक्ति 22, 'ओडेयार' के स्थान पर 'ओडेयर' पढ़िये ।

पृष्ठ (iv), पंक्ति 7, 'कैसरबई (बीड)' के स्थान पर 'कैसरबाई (बीड़)' पढ़िये ।

पृष्ठ (viii), पंक्ति 5, 'पारधी' के स्थान पर 'पारधी' पढ़िये ।

पृष्ठ (viii), पंक्ति 17, '(नीरंगपुर)' के स्थान पर '(नौरंगपुर)' पढ़िये ।

पृष्ठ (xiii), पंक्ति 6, 'सिद्दनाल' के स्थान पर 'सिदनाल' पढ़िये ।

पृष्ठ (xiii), पंक्ति 21, 'श्री एडुआर्डो फैलीरी' के स्थान पर 'श्री एडुआर्डो फैलीरो' पढ़िये ।

पृष्ठ 6, पंक्ति 9, 'राजनीतिक' के स्थान पर 'राजनैतिक' पढ़िये ।

पृष्ठ 21, नीचे से पंक्ति 4, 'कजाम' के स्थान पर 'कषागम' पढ़िये ।